2014-15
समर्पण

सीताराम समर्पण महाविद्यालय
नरैनी (बाँदा) उ.प्र.

समर्पण
पत्रिका

वर्ष–11 अंक–प्रथम

स्थापित वर्ष – 2004

संरक्षक
प्रबन्धक- श्री आर0 डी0 त्रिपाठी
प्राचार्य-डा0 राम आसरे चौरसिया

प्रधान संपादक
डॉ0 राहुल द्विवेदी

वार्षिक पत्रिका 2014–2015
सीताराम समर्पण महाविद्यालय
नरैनी (बाँदा)

वर्ष 2014–15

सम्पादक मण्डल

संपादक मण्डल

श्री लक्ष्मीकान्त मिश्रा

श्री मनोज कुमार

श्री प्रभात सोनी

प्रकाशकःडा0 रामआसरे चौरसिया

मुद्रकः ओम ऑफसेट,अतर्रा (बाँदा)

सन्देश

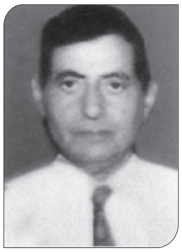

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सीताराम समर्पण महाविद्यालय नरैनी (बाँदा) द्वारा वार्षिक पत्रिका "समर्पण" का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका 'समर्पण' में सारगर्भित भावों को स्थान दिया जायेगा जो महाविद्यालय परिवार के साथ-साथ सभी पाठकों को एक नयी ऊर्जा व लक्षित दिशा प्रदान करेगा।

मैं वार्षिक पत्रिका "समर्पण" के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

श्री आर0 डी0 त्रिपाठी
प्रबन्धक
सीताराम समर्पण महाविद्यालय
नरैनी (बाँदा)

प्राचार्य सन्देश

सीताराम समर्पण महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "समर्पण" का प्रकाशन हो रहा है मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि पत्रिका महाविद्यालय की गौरवशाली परम्परा को प्रतिबिम्बित करेगी। यह महाविद्यालय जनपद–बाँदा का अग्रणी महाविद्यालय है, शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति करता हुआ निरंतर आगे कि ओर अग्रसर है। आज यह महाविद्यालय अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी में अपनी पहचान बनाने मे कामयाब हुआ है। यह पत्रिका महाविद्यालय का दर्पण है। महाविद्यालय के उत्तरोत्तर एवं सर्वांगीण विकास में महाविद्यालय के शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं छात्र वर्ग का सहयोग विशेष रूप से सराहनीय है।

अन्त में, मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल, शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

डा0 रामआसरे चौरसिया
प्राचार्य

सन्देश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि सीताराम समर्पण महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका "समर्पण" का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "समर्पण" में छात्र/छात्राओं के ज्ञान वर्धन हेतु उत्कृष्ट पठनीय लेखों का समावेश किया जायेगा जिससे उनका शैक्षिक एवं बौद्धिक विकास हो सके।

मैं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'समर्पण' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

उप जिलाधिकारी
नरैनी

Vision-

Sitaram Samarpan Mahavidyalaya has been an institution of excellence in Higher Education that continuously responds to changing social realities through the development and application of knowledge, aims to prepare students for success by creating an environment of ideas and excellence that nurtures intellectual, social, economics and cultural developments. We wish to hold academic quality as the prime attribute of our institution, allocating human, physical and financial resources appropriate to our educational mission.

Mission-

- To serve the society at large, by inculcating disciplined, confident and dedicated students committed to their profession.
- To instill in the students specific skills needed for discharging duties as competent members of society.
- To provide opportunities for realization of the student's potential and cater to the needs of individual differences and creativity.
- To develop a sense of commitment and accountability in the students.
- To prepare the students confident enough to face the challenges in their day to day activities.
- To enhance the commitment of faculty, staff, and students of the centrality of diversity, social justice, and democratic citizenship.
- To provide leadership in the development of collaborative professional relationship with school organization and other institutions focused on the improvement of education in school and workplace.
- To sustain a caring, supportive climate throughout the College.

सीताराम समर्पण महाविद्यालय एक दृष्टि में

अंधेरे में टिम-टिमाते दीपक का भी महत्व होता है। उच्चशिक्षा से वंचित नरैनी परिक्षेत्र में वर्ष-2004 में एक ऐसा ही दीपक जला। अवकाश प्राप्त आई0 जी0 (पुलिस) श्री आर0 डी0 त्रिपाठी ने नरैनी परिक्षेत्र के शैक्षिक अंधकार को देखा और उसे मिटाने के लिए संकल्प के साथ वर्ष 2003 में सीताराम समर्पण महाविद्यालय की संस्थापना की। वर्ष 2004 से बी0ए0 की कक्षाऐं प्रारम्भ हुयी। बी0ए0 में वर्ष प्रति वर्ष बढ़ती छात्र संख्या को देखकर श्री त्रिपाठी जी ने बी0एस-सी0 एवं बी0एड0 कक्षायें खोलने का संकल्प लिया। तमाम प्रकार की कठिनाईयाँ आने के बावजूद भी वे हिम्मत नहीं हारे। उनके सतत् प्रयासों से वर्ष 2010 में बी0एस-सी0 एवं बी0एड0 की मान्यता उत्तर प्रदेश शासन एवं बुन्देलखंड विश्वविद्यालय झाँसी से महाविद्यालय को प्राप्त हुयी महाविद्यालय ने अपने अच्छे अनुशासन एवं शिक्षण गतिविधियों द्वारा शीघ्र ही विश्वविद्यालय में स्थान बना लिया।

आज सीताराम समर्पण महाविद्यालय बाँदा जनपद का लोकप्रिय महाविद्यालय बन गया है। इसमें 2000 से अधिक छात्र/छात्रायें प्रति वर्ष उच्च शिक्षा ग्रहण करते है। महाविद्यालय में 59 अनुमोदित शिक्षक बी0ए0/बी0एस-सी0/बी0एड0 में कार्यरत है। यहाँ एक अच्छा क्रीड़ा क्षेत्र भी है जिसमें बास्केट बाल, क्रिकेट, खो-खो आदि खेल लोकप्रिय है। यहाँ राष्ट्रीय सेवा योजना की एक इकाई वर्ष 2011 से संचालित है। एन0सी0सी0 की इकाई खोलने के लिए बटॉलियन कार्यालय, फतेहपुर से पत्राचार जारी है। परिसर में बैंक एवं पोस्ट ऑफिस स्थापित करने के प्रयास भी चल रहे है।

सीताराम समर्पण महाविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू0जी0सी0) नई दिल्ली से यू0जी0सी0 एक्ट 1956 की धारा 2(F) एवं 12(B) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त है। निकट भविष्य में इस कालेज के उत्तरोत्तर उन्नयन की आशा की जाती है।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रात्यायन परिषद बैंगलौर द्वारा मान्यता प्रदान किये जाने की प्रक्रिया प्रचलित है।

प्राचार्य

सम्पादकीय

सीताराम समर्पण महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका समर्पण का यह अंक आपके सामने है। पत्रिका के इस अंक को 21 वीं सदी की समस्याओं पर केन्द्रित किया गया है। यह पत्रिका छात्रों के भावों एवं कल्पनाओं का साकार रूप है, साथ ही कला, विज्ञान, शिक्षा एवं तकनीकी के क्षेत्र में छात्रों को जागरूक बनाये रखने का एक प्रयास है, जिसमें महाविद्यालय के सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को केन्द्र में रखकर लेखों का प्रकाशन हुआ है।

प्राध्यापकों के लेखों से छात्रों को प्रोत्साहन होगा, ऐसा विश्वास है।प्राचार्य डा0 रामआसरे चौरसिया के कुशल मार्ग दर्शन से यह "समर्पण" पत्रिका इस रूप में प्रस्तुत है।

आपके समक्ष यह श्रृंखला लाने से पहले इस पत्रिका में प्रबन्धक, प्राचार्य, उपजिलाधिकारी, शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं के बहुमूल्य सुझावों को सम्मिलित किया गया है,

हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका "समर्पण" से आप अवश्य ही लाभान्वित होंगे

धन्यवाद

प्रधान संपादक

डॉ0 राहुल द्विवेदी

<u>वन्दना</u>

मुझको नवल उत्थान दो माँ, सरस्वती वरदान दो-2
माँ शारदे हंसासिनी, वागीश वीणा वादिनी
मुझको अभय वरदान दो माँ, सरस्वती वरदान दो।।

मुझको नवल उत्थान दो माँ, सरस्वती वरदान दो-2
माया मुझे नही ठग सके, मनमोह में नही फंस सके।
कर दूर सब अज्ञान दो माँ, सरस्वती वरदान दो।।

मुझको नवल उत्थान दो माँ, सरस्वती वरदान दो-2
हे सत्य जीवन सारथी, तेरी करूं नित आरती।
विद्या विनय वरदान दो माँ, सरस्वती वरदान दो।।

मुझको नवल उत्थान दो माँ, सरस्वती वरदान दो-2

अनुक्रमणिका

रचना	पृष्ठ
जीवन मे पुरूषार्थ	1
अष्टादश पुराणानां संक्षिप्त परिचय	2
अतुल्य भारत निर्माण के लिये विवेकानंद का आह्वान	3
गांव बदलेगा तो देश बदलेगा	5
प्रकृति से निकटता	7
कर्मवीर की यात्रा	8
कृषि में नील-हरित शैवालो का महत्व	9
कैंसर	11
Spectrum	11
ASquirt of stem cell gel heals brain injuries	12
नरैनी दर्शन	13
भूगोल एक विषय	17
अम्ल वर्षा	19
साक्षात्कार की तैयारी कैसे करे	20
जीवन के प्रति तत्परता	23
कविता	24
ग्लोबल वार्मिका-धधकती धरती	25
ऊर्जा संरक्षण एवं उसकी बढती आवश्यकता	26
बुद्धि का विकास कीजिए	28
चिंतन	29
जिन्दगी	30
अपना दर्द	30
उर्जा का सबसे बडा स्रोत-सूर्य	31
समय का सदुपयोग	32
शिक्षक दिवस	34
एक देहाती स्त्री का पत्र	35
पैर छूने की परम्परा क्यों	35
कविता	36
उपदेश वाटिका	36
बदला जमाना	37
समझो कुछ गलत है	38
सोंच	38
आधुनिक हास्य चालीसा	39
बहुत सजग रहना है इनसे इनके झांसे में मत आना	39
देश भक्ति गीत	40
वात्सल्य की कल्पना	41
मेरा भारत धन्य रहे	42
बेटियाँ	42
सफलता	43
भारतीय किसान	43
गुरू का महत्व	44
कविता	44
मेरे सपनों का भारत	45
तू खुद को बदल	45
इरादे कर बुलंद	46
जीवन में घबराना कैसा	46
महाविद्यालय सम्बन्धित	....

जीवन में पुरूषार्थ

दिनेश कुमार पटेल
प्रवक्ता, संस्कृत विभाग

मनुष्य के जीवन मे पुरूषार्थों का अत्यधिक महत्व है वे पुरूषार्थों के बिना यदि जीवन जीते है तो उनका जीना व्यर्थ है। अतः मनुष्य को अपने पुरूषार्थों की यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिए। पुरूषार्थों की संख्या चार है-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन्हें पुरूषार्थ चतुष्टय भी कहा गया है। नारायण पण्डित द्वारा रचित मित्र-लाभ में इनकी सुन्दर व्याख्या इस प्रकार की गयी है।

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राणाः संस्थितिहेतवः।
तन्निघ्नता किं न हतं रक्षता किं न रक्षितम्।।

प्राणी ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (इन चार पुरूषार्थों) की स्थिति के कारण है। उन (प्राणों) का नाश करने वालों ने क्या नहीं नष्ट किया, और (उनकी) रक्षा करने वालों ने क्या नहीं बचाया?

मनुष्य को धर्म के मार्ग पर चलकर अपना कार्य करना चाहिए। संसार के प्रत्येक व्यक्ति का अपना कोई न कोई धर्म होता है, वेदों में धर्म की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है-
"धारणात् इतिधर्मः"

अर्थात जो धर्म धारण करता है, वेदों के कथनानुसार चलता है, उसे धर्म कहा जाता है। मनुष्य को शास्त्रों में बताये गये मार्ग के अनुसार चलकर अपने धर्म की यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिए। जैसे एक विद्यार्थी का धर्म है- गुरू का सम्मान करते हुए विद्या अध्ययन करना। यह उसका प्रथम पुरूषार्थ माना गया है। दूसरा पुरूषार्थ है अर्थ-धर्म को ध्यान में रखकर आर्थिक क्रियायें करें अर्थात् धन एकत्र करने का कार्य करें, क्योंकि धर्म पूर्वक कमाया गया धन जीवनपर्यन्त चलता है। तीसरा पुरूषार्थ है, काम-धर्म का आचरण करते हुए सन्तानोत्पत्ति करना। मनुष्य का चौथा पुरूषार्थ-मोक्ष बताया गया है, मोक्ष का अर्थ है-संसार के आवागमन से मुक्ति प्राप्त करना, अर्थात् सुख को प्राप्त कर लेना।

अष्टादश पुराणानां संक्षिप्त परिचयं

सुशील कुमार तिवारी
संस्कृत विभाग

1. विष्णु पुरार्णम्– अस्य रचयिता पाराशरः अस्ति, अस्य पुराणस्य साहित्यिकम् दार्शनिकम् ऐतिहासिकञ्च महत्वं अस्ति। अत्र विष्णुमेव सर्वदेव मयं परमेश्वरं मत्वा तदुपासनायाः वर्णनमास्ति।
2. नारदीय पुराणम्– एतद् वृहन्नारदीयं पुराणमपि कथ्यते, व्रैष्णव धर्मस्य प्रति पादके अस्मिन पुराणे धर्मिकोत्सवानाम् एवं पर्वणां वर्णनं कृतम्।
3. भागवत महापुराणम्–अस्मिन महापुराणे भगवतः विष्णो सुप्रसिद्धावतारस्य श्री कृष्णस्य रासलीलाः तथा क्रीडाः दशम स्कन्धे वार्णिताः सन्ति।
4. अग्नि पुराणम्–एतस्मिन पुराणे साहित्यशास्त्रीयाः बहु विद्या विषयाः विवेचिताः सन्ति, महाभारतमिव अस्मिन संकलन ग्रन्थे काव्य शास्त्र व्याकरण आयुर्वेद ज्योतिष कोश ग्रन्थ धनुर्वेद, गान्धर्ववेद अर्थशास्त्र वनस्पतिशास्त्र स्थापत्यकला नाट्यशास्त्रादयः भूयासः विषयाः समाविष्टाः सन्ति।
5. मत्स्यपुराणम्– इदमैतिहासिक महत्वस्य पुराणमस्ति। अत्र दक्षिण भाारतस्य अनेक स्थानानां वर्णनम् तथा आन्ध्र भूपतींनां प्रामाणिकीं वंशावलिः प्रदत्तास्ति।
6. गरुड़पुराणम्– अस्मिन भगवतः विष्णोंः व्यापकरुपस्य वर्णनं कृतमस्ति।
7. पद्म पुराणम्– अस्मिन संकेतेन भगवतः उपासनायाः वर्णनमस्ति। ब्रह्मणः उत्पत्तिः पद्माज्जाता अतः अस्य पुराणस्य अभिधानं पद्मपुराणम् इति कृतम।
8. वराहपुराणम्– भगवतः विष्णोंः वराह अवतारस्य कथामादाय 218 अध्यायेषु चतुर्विंशति सहत्रमिताः श्लोकाः सन्ति।
9. ब्रह्माण्ड पुराणम्– अत्र तीर्थानां माहात्म्येन एवम् उपख्यानै सह प्रमुख रुपेण अद्वैत बुद्धि एवं श्री रामस्य भक्तिः प्रति पाद्यते।
10. ब्रह्मवैवर्त पुराणम् – श्रीकृष्ण स्वपूर्व ब्रह्मस्वरूपस्य प्रकटीकरणेन अस्य नाम धेयं ब्रह्मवैवर्त पुराणम् अभवत।
11. वामन पुराणम् – अस्मिन पुराणे भगवतः विष्णोः वामनावतारस्य कथया सह शिव–पार्वत्योः विवाहस्य वर्णनम् लिंग पूजायाः महत्वञ्च प्रतिपादितम्।
12. ब्रह्मपुराणम् – एतदेव आदिपुराणम् अपि अभिधीयते। अत्र सूर्यं शिवं मत्वा अर्थात शिवरूपेण तस्य महत्ता प्रतिपाद्यते।
13. मार्कण्डेयपुराणम्– देव्याः दुर्गायाः प्रशसायां देवी महात्म्यम् अति मात्रायां प्रस्तुती कृतम् अस्ति।
14. भविष्यपुराणम्–अत्र ब्रह्मण अतिरिक्तं अग्नेः तथा नागदेवानां पूजायाः उल्लेख विद्यते।

15. शिवपुराणम् –इदं वायोः अर्थात् वायु पुराणस्यैव एकः भागः मन्यते। महाभारते तथा हरिवंश पुराणोऽपि अस्योल्लेखः अस्ति।

16. लिंगपुराणम्– अत्र शिवस्य अष्टाविंशति अवताराणां विस्तरेण सह वर्णनं कृतम्।

17. स्कन्दपुराणम्– अत्र पंञ्च संहिताः सन्ति सनत्कुमारीया ब्राह्मी वैष्णवी शांकरी तथा सौरी। काशीखण्ड नाम्नि अध्याये वाराणस्यास्तथा तत्समीपवर्तिनां मन्दिराणां वर्णनमस्ति।

18. कूर्मपुराणम्– षट् सहत्र श्लोकोपेतस्य अस्य पुराणस्य केवलम् एक भागः ब्राह्मी संहिता प्राप्यते अत्र शिवस्य अवतारस्य वर्णनमस्ति।

एकस्मिन प्रसिद्धे श्लोके अष्टादश पुराणानां प्रथमाक्षरमादाय तेषां गणना कृतास्ति।

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं व चतुण्ट्यम्।
अनापलिंग कूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

''अतुल्य भारत निर्माण के लिए विवेकानन्द का आह्वान''

मनोज कुमार
प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग

जब–जब इस पृथ्वी पर धर्म का पतन और आततायियों का क्लेश सम्पूर्ण मानव समाज को पथभ्रष्टता की ओर ले जाने लगता है अर्थात् जब दानवता का वर्चस्व मानवता पर बढ़ जाता है और मानवता का तेजी से पतन होने लगता है तब समाज को नई दिशा व दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए इस पृथ्वी पर समय–समय पर महापुरुषों का जन्म होता है। भारत में ऐसे अनेकों महापुरुषों में से स्वामी विवेकानन्द का नाम अग्रणी है। स्वामी विवेकानन्द एक महान विचारक, शिक्षा मनीषी एवं आधुनिक मानव समाज के लिए प्रमुख आदर्श व्यक्तित्व थे। स्वामी जी को युवाओं की प्रेरणा स्रोत तथा भारत का आध्यात्मिक राजदूत कहा जाना कोई अतिसयोक्ति नहीं होगी।

स्वामी जी का कहना था कि सम्पूर्ण दुनिया में भारत ही प्रथम भूमि थी जहाँ ज्ञान ने सर्वप्रथम अपना आवास बनाया था और मानव प्रकृति के रहस्यों के अंकुरण सर्वप्रथम इसी भूमि पर हुये थे। उनका कहना था कि भारत ही विश्व का एक मात्र ऐसा देश है जिसने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को चिरकाल से बनाये रखा है। विश्व के अनेकों देशों का वजूद समाप्त हो गया किन्तु आज भी हम जीवित हैं और आज भी हमारे वेद, पुराण, उपनिषद्, ऋषि, सभ्यता, संस्कृति व परम्पराएं जीवित है।

यही वह भारतवर्ष है जिसने हजारों वर्षों तक विभिन्न प्रकार के दुःखद दिनों की यातना को झेला हुआ है इस देश ने संसार की किसी भी चट्टान से अधिक कठोरता के साथ अपने आप को स्थापित करके रखा हुआ है। इस देश की जीवन शक्ति भी आत्मा के समान ही अनादि, अनन्त, अखण्ड एवं अमर है, हम सभी को ऐसे महान देश की सन्तान बनने का गौरव प्राप्त है।

स्वामी जी के बारे में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा कि – ''यदि आप भारत को समझना चाहते है तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिए। उनमें सब सकारात्मक है; कुछ भी नकारात्मक नहीं है।'' भारत की उन्नतिशीलता का आधार जनसाधारण की शिक्षा और बुद्धि का चतुर्मुखी प्रसार है।

उन्होंने सम्पूर्ण समाज को उद्योगशीलता, कर्मण्यता एवं परिश्रम करके जीवन गुजारने का पाठ पढ़ाया। उन्होंने प्राचीन काल से चली आ रही आडम्बर पूर्ण विचार धाराओं के स्थान पर सत्य एवं प्रामाणिक तथ्यों को महत्त्व दिया। स्वामी जी ने जातिवाद एवं अस्पृश्यता को जड़ से उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। इससे पता चलता है कि वह भारत के जन–जन के विकास को देखना चाहते थे।

भारत देश में धर्म ही सम्पूर्ण राष्ट्र का हृदय है ऐसा स्वामी जी का विचार था क्योंकि इसी के ऊपर सम्पूर्ण राष्ट्र की ईमारत खड़ी हुई है। स्वामी जी के अनुसार..

''मैं ऐसा धर्म चाहता हूँ जो हर व्यक्ति को अन्न, जल, वस्त्र और शिक्षा देने के साथ–साथ उन्हें अपने सभी दुःख दूर करने की शक्ति प्रदान करें। हम सब भारतीय पहले है, मराठी, गुजराती, बंगाली तथा मद्रासी बाद में। सबको मिलकर इस देश की दरिद्रता एवं अज्ञानता को दूर करना है।''

भारतीय संस्कृति के अनन्य पोशक, समग्र क्रांति के अग्रदूत, नवभारत का निर्माण करने वाले शिक्षा में राष्ट्रवाद का निर्माण करने वाले स्वामी जी ने अंग्रेजी शिक्षा का प्रबल विरोध न करके उसके स्थान पर एक नवीन शिक्षा प्रणाली – ''वैदान्तिक साम्यवाद'' की भविष्यवाणी की। स्वामी जी का मानना था कि वेदान्त के माध्यम से भारतवर्ष का उत्थान एवं कल्याण हो सकता है। वह कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग तथा राजयोग को ऊर्जा का पुँज कहते थे जो युवा शक्ति को जागृत करने के लिए आवश्यक था।

''मुझे 100 जोशीले युवा लोग दो, मैं भारत को बदल दूँगा''

उन्होंने भारतीय युवकों को यह सन्देश दिया कि – ''तुम्हे ध्येयवादी युवक बनना चाहिए, मानव को केवल मानव की आवश्यकता है और सब कुछ हो जायेगा लेकिन आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, पूर्ण प्रामाणिक नवयुवकों की। अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, देरी न करो, क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है। क्योंकि लक्ष्य तक पहुँचे बिना पथ में पथिक विश्राम कैसा''

भारत की आडम्बरवादी परम्परा के स्वामी जी प्रबल विरोधी थे उनका मानना था कि चन्दन टीका लगाने से अधिक अच्छा होगा कि आप स्वयं को कर्म तथा निष्ठा से प्रक्षालित करें। उनका कहना था कि चरित्र मनुष्य का निर्माण करता है। यदि स्वामी जी के विचारों को सम्पूर्ण भारतवासी अक्षरसः अपने जीवन में उतारते हैं तो अवश्य ही पुनः अतुल्य भारत का निर्माण हो सकेगा।

गॉव बदलेगा तो देश बदलेगा

कुलदीप कुमार गुप्ता
प्रवक्ता
बी0एड0 विभाग

गाड़ी–वाहनों की तेज आवाजों, तरह–तरह के शोर शराबों से दूर भारत की अधिकांश जनसंख्या गॉवों में बसती है। गॉव के बारे में सोचते ही दूर–दूर तक फैले हुए हरे–भरे खेत, बैलगाडियॉ, ट्रैक्टर, आम–अमरूद आदि के बगीचे मानसपटल पर छा जाते हैं। सुबह उठते ही तरह–तरह के पक्षियों की आवाजें सुनाई देना, गाय, बैल, भैंस, बकरियों आदि पशुओं का झुंड दिखाई देना, बछड़ों का रंभाना, देर से आते हुए किसी वाहन की आवाज पर लोगों का ध्यान आकर्षित होना, महिलाओं का भोर से ही उठकर कामों में लग जाना और ऐसी न जानें कितनी यादें जुड़ी होती है गॉवों से। गॉवों की एक अलग ही बात होती है, जिसके कारण सभी लोगों का अपने गॉव से एक खास लगाव होता है।

हमारे देश में अनगिनत गॉव हैं। इसलिए तो कहा जाता है कि असली भारत तो गॉवों में निवास करता है। लेकिन स्थिति यह है कि गॉवों का अस्तित्व अब खतरे में पड़ता जा रहा है। लोग अपने गॉवों को स्वच्छ, समृद्ध व सुविकसित बनाने के स्थान पर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। एक ओर जहॉ शांति व सुकून गॉवों में मिलता है, वहीं आज के गॉव जीवन की मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित हैं।

गॉव तक पहुॅचने के लिए सड़कों का अभाव, कच्चे मकान, जलस्रोतों की समस्याएॅ, शौचालयों का अभाव, विद्यालय–चिकित्सालय व अन्य आधुनिक सुविधाओं से वंचित गॉवों में आज लोग रहना पसंद नहीं कर रहे। बरसात के मौसम में तो इन गॉवों की और दुर्दशा हो जाती है। कच्चे मार्ग होने के कारण आवागमन बाधित हो जाते हैं। लेकिन इन समस्याओं से परिचित कई समझदार ग्रामवासियों ने अपने गॉवों को समृद्ध बनाने के लिए प्रयास भी किए हैं और उन्हें आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न बनाया है, पर ऐसे गॉवों की संख्या कम है।

गॉवों का बसेरा प्रकृति की गोद में होता है। इस कारण गॉवों के नाम अक्सर इनकी प्रकृति से प्रेरित होकर रखे गए और कई गॉवों के नाम उस व्यक्ति के नाम पर भी रखे गये जो सबसे पहले जमीन में मोहड़ा यानी लकड़ी का एक बड़ा पिलरनुमा टुकड़ा गाड़कर गॉव बसाने की शुरूआत करता था। मुक्तसर स्थित गॉव 'कुत्तेयांवाली' फिरोजपुर के पास गॉव मज्जियॉ (पंजाबी में भैंस को मज्ज कहते हैं), मोगा के पास 'शेरपुर', जालंधर स्थिति जंडियाला के पास गॉव 'चूहे की' आदि अजीबो गरीब नाम पशुओं–जानवरों की अधिकता के कारण रखे गये हैं।

बिहार के ही भागलपुर जिले के नवगछिया अनुमंडल के गोपालपुर प्रखंड का एक गॉव 'धरहरा' है, जो बेटी के जन्म पर पेड़ लगाने की अपनी अनूठी परंपरा के कारण देश भर में विख्यात हो गया है। सन्2012 में गणतंत्र दिवस परेड में राजपथ पर इस गॉव की प्रेरक झॉकी को प्रस्तुत किया गया था, जिससे सभी देशवासी इस गॉव की विशेषता से परिचित हुए। लगभग 60 घरों के इस गॉव में हर घर के लोग बेटी के जन्म होने पर एक या अनेक पेड़ लगाते हैं और इन पेड़ों के फलों से गरीब बेटियों की शिक्षा का खर्च पूरा किया जाता है। हरियाणा के भिवानी जिले के 'नाथूवास' गॉव के लोग दूध न बेचने की परंपरा को कई दशकों से निभाते चले आ रहे हैं।

हमारे देश की आत्मा गॉवों में बसती है। आज जहॉ पूरी दुनियॉ 'वैश्विक गॉव' में सिमटती दिख रही है, वहीं भारत के गॉवों में ऐसी ही कुछ बातें है, जो सदैव आकर्षण का केन्द्र रही है। जरूरत यह है कि गॉवों को बचाने, संरक्षण देने व विभिन्न तरह की सुविधाओं से परिपूर्ण बनाने के प्रयास किए जाएॅ, ताकि भारत का हर गॉव सुन्दर, स्वच्छ बन सके और इसके लिए गायत्री परिवार ने गॉवों को गोद लेने की मुहिम चलाई है और आदर्श गॉवों का निर्माण किया है।

एक आदर्श गॉव के रूप में परमपूज्य गुरूदेव की जन्मस्थली ऑवलखेड़ा का चयन किया गया है, जिसे आज हम एक स्वच्छ व सुविकसित ग्राम का आदर्श मॉडल भी कहते है। इसी तरह के अन्य गॉवों को विकसित करने का दायित्व भी युग निर्माण मिशन के द्वारा लिया गया है। इसके साथ ही देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा ग्राम प्रबंधन हेतु एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है, जिसमें गॉवों के विकास हेतु विभिन्न तरह के प्रयोग सिखाए जाते हैं। गॉवों में निर्माण किए जाने वाले विभिन्न उत्पादों की जानकारी भी इसमें दी जाती है, जिससे ग्रामवासी स्वयं को स्वस्थ, सुखी, समृद्ध भी बना सकें। यदि ऐसी ही पहल सभी सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा की जाये और हर कोई गॉवों को विकसित करने पर जोर दे, तो हम भारत वर्ष को सुखद भविष्य दे पाने में सक्षम होंगे।

प्रकृति से निकटता

संजय कुमार यादव
प्रवक्ता
बी०एड०विभाग

आज के पुजारियों ने ईश्वर प्राप्ति के इतने सारे मार्ग बता दिये है कि उनकी सीमा खत्म होती नहीं दिखती हमें कहा गया कि स्नान करके ही पूजा करें, पूजा भूखे पेट करें, आप उपवास करें, परन्तु प्रकृति ने ऐसा कभी नहीं कहा ये सारे नियम प्रकृति के प्रतिकूल है परमात्मा ने कभी ऐसा नहीं कहा। भगवान ने कभी यह भी नहीं कहा कि आप मेरी पूजा करें, शायद ऐसी बातें अपनी बात मनवाने या फिर दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता जाहिर करने के उद्देश्य से कही गयी होंगी इसी संदर्भ में एक कहानी याद आ रही है। लंदन के किसी चर्च के एक पादरी के मन में आया कि यहाँ जो एक द्वीप पर आदिवासियों का बसेरा है उन लोंगों को भी हम लोगों की जीवन शैली और परमात्मा के रहस्यों को बताया जाये क्योंकि वे भी हमारे समान व्यक्ति है परन्तु दीन–दुनिया से दूर वे अपने द्वारा बनाये रश्मों–रिवाज में रमें है उन्हें भी परमात्मा के बारे में जानना चाहिए। यह सब सोंचकर पादरी जहाज पर सवार होकर उस द्वीप पर पहुंचे। वहाँ उन सभी ने सविस्तार बातचीत की और पुनः आने का आश्वासन देकर संध्या बेला में वापस लौटने लगे उनका जहाज कुछ आगे बढ़ा था कि उन्होंने देखा वे आदिवासी लोग जिनके पास अभी वे बैठे थे पानी की लहरों की ओर दौड़ते हुए उनके पास आ रहे है। यह देख पादरी बड़े अचंम्भित हुए वे समझ गए कि इन लोगो ने ईश्वर को पहले ही पा लिया है।

पास आकर उन लोगों ने पादरी से पूछा –फादर आपने जितनी भी बातें बतायी हम लोगों ने उन्हें अच्छी तरह से समझ लिया परन्तु हम लोग आपसे यह पूछना भूल गए थे कि जिस परमात्मा के बारे में आपने हम लोगों को बताया हम उसे किस नाम से पुकारें? पादरी ने जवाब दिया–मैने अभी आपकों जितनी भी बातें बतायी वे सब मै वापस लेता हूँ आपको मेरे बताये रास्ते पर चलने की आवश्यकता नही है आप तो मुझसे भी आगे निकल चुके है आप लोगों को परमात्मा की निकटता पहले से ही प्राप्त है तात्पर्य यह है कि परमात्मा के पास जाते ही आप माँगना प्रारम्भ न कर दें। गोस्वामी तुलसीदास ने भी तो कहा है कि हमारे जीवन में सम्पूर्ण सुख सहज ही प्राप्त होते है ईश्वर, प्रकृति और हमारा जीवन एक ही है केवल उनका स्वरुप भिन्न हो सकता है ऋषि मुनियों ने कहा है कि हम ही ईश्वर है परन्तु हमने ऐसा चश्मा लगा लिया है कि हमें वास्तविकता का ज्ञान नहीं हो पा रहा है।

कर्मवीर की यात्रा

मनोज कुमार
प्रवक्ता
बी०एड० विभाग

संकट से वीर घबराते नहीं ।
आपदाएँ देख छिप जाते नहीं।।
लग गए जिस काम में पूरा किया।
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।।

हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता।
कर्म वीरों को न इससे कोई वास्ता।।
बढ़ चले तो अन्त तक ही बढ़ चले।
कठिनतर गिरि श्रृंग ऊपर चढ़ गए।।

कठिन पंथ को देख मुस्काते सदा।
संकटों के बीच वे गाते सदा।।
है असंभव कुछ नहीं उनके लिए।
सरल संभव कर दिखाते वे सदा।।

यह असंभव कायरों का शब्द है।
कहा था नेपोलियन ने एक दिन।।
सच बताऊँ जिन्दगी ही व्यर्थ है।
दर्प बिन, उत्साह बिन और शक्ति बिन।।

प्रेरणा–

लक्ष्य न ओझल होने पाये, कदम मिलाकर चल।
सफलता आपके चरण चूमेगी, आज नही ंतो कल।।
कुछ किए बिना यूं ही, जय–जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की, कभी हार नहीं होती।।

कृषि में नील–हरित शैवालों का महत्व

डा0 लखन लाल कुशवाहा
प्रवक्ता
वनस्पति विज्ञान विभाग

हमारे देश में धान की उपज कम होने का मुख्य कारण यह है कि यहां पर अधिकांश कृषक लघु एवं सीमांत है। धान की नई–नई संकर प्रजातियों एवं सघन कृषि साधनों के माध्यम से धान की पैदावार में अप्रत्याशित वृद्धि संभव हो सकी है, लेकिन यह विदित है कि अधिक उत्पादन हेतु उर्वरकों की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है। रसायनिक उर्वरकों की कीमतें दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जो कि लघु एवं सीमांत कृषकों की खरीद क्षमता से बाहर होती जा रही है, अतः लघु एवं सीमांत कृषक उर्वकों की संतुलित मात्रा का प्रयोग नहीं कर पाते है, और धान की भरपूर उपज प्राप्त करने में असमर्थ रह जाते हैं साथ ही दूसरा मुख्य कारण यह है कि पानी भरे धान के खेतों में डाली गयी रसायनिक नाइट्रोजन उर्वरक का धान के पौधे केवल 35 प्रतिशत भाग ही उपयोग में ला पाते है, शेष नाईट्रोजन उर्वरक बेकार चला जाता हैं। नील हरित शैवाल के प्रयोग से रसायनिक नत्रजन की उपयोगिता की मात्रा में भी वृद्धि होती है। इन परिस्थियों में नील हरित शैवालों का प्रयोग एक विकल्प ही नहीं अपितु वरदान स्वरूप है।

परिचयः– पौधों के समुचित विकास के लिए नाईट्रोजन एक आवश्यक पोषक तत्व है। रसायनिक उर्वरकों के अलावा हरे नीले शैवालों की कई प्रजातियाँ मुक्त वायुमण्डलीय नाईट्रोजन (80%) का स्थिरीकरण कर पौधों तथा मृदा को देती है। इन सूक्ष्म हरे नीले शैवालों को ही नील हरित शैवाल जैव उर्वरक कहते है। नील हरित शैवाल एक विशेष प्रकार की काई होती है। इनकी उत्पत्ति पादप जगत में सबसे पहले हुयी। इसकी कोशिका प्रोकैरियाटिक प्रकृति की होती है। अर्थात इसकी कोशिका में ई0आर0, गाल्जीकाय, माईट्रोकाण्डिया आदि नहीं पाये जाते । नील हरित शैवालों की कई प्रजातियाँ होती है। जिसमें Aulosira, Nostoc, Anabaena, Scytonema आदि प्रमुख है जिनका उपयोग हम कृषि में जैव उर्वरक के रूप में करते है। नाईट्रोजन स्थिरीकरण की क्रिया शैवालों के संरचना में स्थित एक विशेष प्रकार की कोशिका में ही होती है। जिसे हिटेरोसिस्ट कहते है। यह सामान्य कोशिकाओं से संरचना एवं कार्य में कुछ भिन्न होते है।

धान के खेत का वातावरण नील हरित शैवाल के लिए सर्वथा उपयुक्त होता है। इसकी वृद्धि के लिए आवश्यक ताप एवं प्रकाश, नमी और पोशक तत्वों की मात्रा धान के खेत में विद्यमान रहती है। नील हरित शैवाल द्वारा स्थित किया गया N_2 पौधों को या तो शैवालों को जीवित अवस्था में ही मिल जाता है या शैवाल कोशिकाओं के मृत होने के बाद जीवाणुओं द्वारा विघटन होने पर प्राप्त होता है।

नील हरित शैवाल जैव उर्वरक के प्रयोग से धान के खेत में लाभः–

1. नील हरित शैवाल जैव उर्वरक की 12.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर की मात्रा 30 किग्रा नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर देती है जहां पर रसायनिक नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग आवश्यक मात्रा में संभव नहीं हो पाता है। शैवाली करण द्वारा 25–30 किग्रा नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर का लाभ फसल को मिलता है
2. नील हरित शैवाल जैव उर्वरक का प्रयोग करके रसायनिक नाइट्रोजन उर्वरक की मात्रा में 30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की बचत होती है।
3. इसके प्रयोग से धान के उत्पादन में 40 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी है, साथ ही साथ नील हरित शैवाल वृद्धिनियंत्रक बिटामिन बी12, अमीनो अम्ल भी श्रावित करते है जिसके कारण पोधों की अच्छी वृद्धि होती है।

नील हरित शैवालों से भूमि का सुधारः–

1. शैवाल का प्रयोग करने से भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है।
2. शैवाल के प्रयोग से मिट्टी की भौतिक दशा में सुधार होता है।
3. भूमि में नाइट्रोजन एवं फास्फोरस की मात्रा में वृद्धि होती है।
4. ऊसर भूमि में सुधार होता है।

कृषकों के लिए नील हरित शैवाल जैव उर्वरक क्यों उपयोगी सिद्ध हो रहा हैः–

1. रसायनिक N_2 उर्वरक पेट्रोलियम जैसे आयातित कच्चे पदार्थो से बनते है, हमारी पृथ्वी पर पेट्रोलियम पदार्थो का एक निश्चित भण्डार है, अतः इसकी कीमतें दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।
2. रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग से अनाजों में कुछ सूक्ष्म तत्वों की कमी हो जाती है। अतः इन आनाजों को खाद के रूप में प्रयोग करने से हमारे शरीर में रोगों के प्रति लड़ने की क्षमता में कमी आ जाती है।

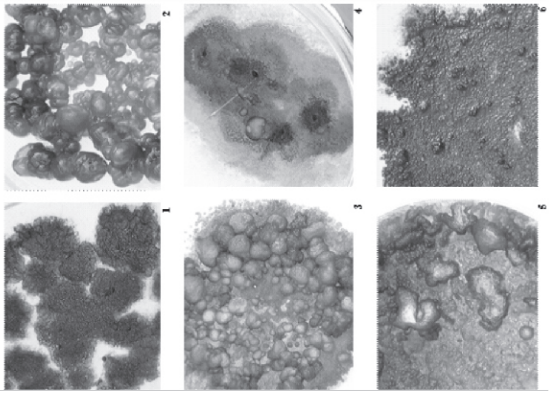

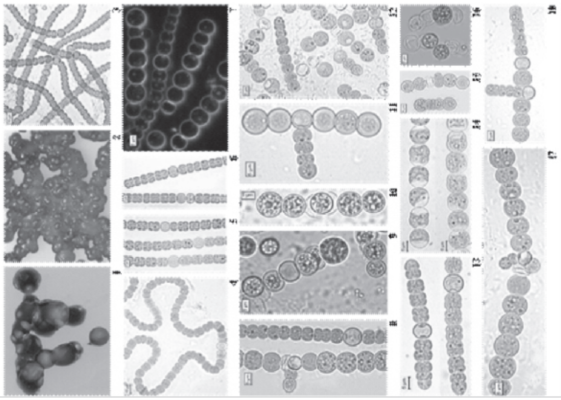

नीले हरे शैवाल

कैंसर

श्रद्धा श्रीवास्तव
प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान विभाग

"कैंसर कोशिकाओं की वह असाधारण वृद्धि है जिसके कारण शरीर की सामान्य कोशिकाएँ असामान्य रूप से मॉइटोटिक विभाजन द्वारा संख्या में लगातार वृद्धि करती है और उभार या गॉठ जैसी संरचना का निर्माण करती है जिसे ट्यूमर कहते है"

शरीर में होने वाली उपापचयी क्रियाओं व वृद्धि की भांति काशिकाओं का कोशिका चक्र व विभाजन भी आवश्यकतानुसार होता है और यदि यह विभाजन सामान्य रूप से होता है तो शरीर में होने वाली सभी क्रियाएं सामान्य रूप से होती है और इस विभाजन का नियंत्रण कुछ विशेष प्रकार की प्रोटीन्स व प्रोटो–ओन्कोजीन्स के माध्यम से होता है। यदि यह प्रोटो–ओन्कोजीन्स बाह्यउद्दीपनों या अन्य किसी त्रुटि के कारण उत्परिवर्तित हो जाती है तो कोशिकाओं में होने वाला नियंत्रित विभाजन अनियंत्रित हो जाता है और जीवों के शरीर में ऐसी कोशिका लगातार विभाजित होकर एक असामान्य आकार के समूह या उभारों के रूप में प्रकट हो जाती है और कोशिकाओं के इस प्रकार के उभारों को ट्यूमर कहते है और उत्परिवर्तित प्रोटो–ओन्कोजीन्स को ओन्कोजीन्स कहते हैं।

अतः कैंसर वास्तव में एक प्रकार का ट्यूमर है जो शरीर के भीतर या बाहर किसी भी स्थान पर उत्पन्न हो सकता है और लगातार विभाजन के कारण कैंसर कोशिकाएं पोषक पदार्थो की इतनी अधिक खपत करने लगती है कि सामान्य कोशिकाओं को पोषक पदार्थों की पूर्ति नहीं हो पाती अतः शरीर की कोशिकाएं धीरे–धीरे क्षीण होकर समाप्त होने लगती हैजिससे कैंसर के रोगी की मृत्यु हो जाती है।

Spectrum

Sanjiv kumar jain
Lecturer, Physics Department

Have you ever seen a rainbow in the sky after the rains? You can see bands of different colours in the rainbow. Where do you think these colours come from? The colours come from sunlight. Sir Isaac Newton, a great scientist who lived in the 17^{th} century, was the first to show that ordinary 'white' light is made up of seven colours-violet, indigo, blue, green, yellow, orange and red (in the order VIBGYOR). The pattern formed by these colours is called a spectrum.

When the sun shines through water droplets in the airs after it rains, or near waterfall, it gets split into its different colours. This is how a rainbow is formed. A diamond cut in a special can also produce a spectrum. Soap bubbles appear colourful because their thin surface splits light into different colours.

Newton showed that a triangular piece of glass called a prism can produce a spectrum. He allowed a thin beam of light to fall on a prism a dark room. After passing through the prism, the beam split into its different colours. A spectrum was seen on a screen kept behind the prism.

A SQUIRT OF STEM CELL GEL HEALS BRAIN INJURIES

SNEH ASHISH MISHRA

Lecturer

(ZOOLOGY DEPARTMENT)

Scientists have developed a gel that helps brains recover from traumatic injuries. It has the potential to treat head injuries suffered in combat, car accident, falls or gunshot wounds. Developed by Dr. Ning Zhang at Clemson University in South Carolina, the gel is injected in a liquid form at the site of injury and stimulates the growth of stem cells there.

Brain injuries are particularly hard to repair, since injured tissues swell up and can cause additional damage to the cells. So far, treatment have tried to limit this secondary damage by lowering the temperature or relieving the pressure at the site of injury.

More recently, scientists have considered transplanting donor brain cells into the wound to repair damaged tissue. This method has so far had limited results when treating brain injuries. The donor cells often fail to grow are stimulate repair at the injury site, possibly because of the inflammation and scarring present there. The injury site also typically has very limited blood supply and connective tissue, which might prevent donor cells from getting the nutrients they require.

Dr. Zhang's gel, however, can be loaded with different chemicals to stimulate various biological processes at the site of injury. In previous research done on rats, she was able to use the gel to help re-establish full blood supply at the site of brain injury. This could help create a better environment for donor cells.

The new gel could treat patient at varying stages in injury, and is expected to be ready for testing in humans in about three years.

नरैनी दर्शन

रमाकान्त द्विवेदी
प्रवक्ता
भूगोल विभाग

देश के बुन्देलखण्ड़ प्रदेश में स्थित नरैनी उन 689 नगर पंचायतों में से एक है, यहाँ के कुल परिवार की संख्या–31075 तथा कुल आबादी–198111 है। नरैनी वैसे तो नरायण की नगरी है परन्तु इस परिक्षेत्र में काल (कालिंजर) विराजें हैं। नरैनी को नगर पंचायत का दर्जा सन्–1950 में मिला तथा विकासखण्ड सन्–24 जुलाई 1978 आई0ए0यस0 अधिकारी स्वर्णदार द्वारा स्थापित हुआ तथा तहसील सन्–1951 में बनी। नरैनी नव निर्मित ग्रामीण कस्बा है जो अभी पुश्पन की अवस्था में है। महाभारत काल में यह क्षेत्र शुक्तिमती नगरी के परिक्षेत्र में था, साथ ही यह क्षेत्र उस परिक्षेत्र का भी भाग था जो शंकर जी के निवास का था। नरैनी से ही निविड़ वन क्षेत्र प्रारम्भ होता है। जहॉ तुंडक नामक ऋषि निवास करते थे। इन्हीं के नाम पर इस वन परिक्षेत्र का नाम तुंडकारण्य् हो गया। इन सब परोक्ष कारको से यहॉ की अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक, सामाजिक–सांस्कृतिक परम्परायें हैं।

प्रदेश का प्राशासनिक स्वरूप– सर्वेक्षित क्षेत्र उत्तर प्रदेश के चित्रकूट धाम मण्डल बांदा में स्थित है। उत्तर प्रदेश का प्रशासनिक स्वरूप कुछ इस प्रकार से है 76 जनपद, 18 मण्डल, 313 तहसील, 8822 विकास खण्ड, 689 नगर एवं नगर समूह, 8135 न्याय पंचायत, 51914 ग्राम पंचायत, 97941 आबाद ग्राम, 9511 गैर–आबाद ग्राम अर्थात प्रदेश में कुल गॉवों कि संख्या–107452 है। इसलिए उत्तर प्रदेश का अध्ययन संक्षेप में करना आवश्यक था।

नरैनी का भौगोलिक परिचय– नरैनी का भू–पत्रक संख्या **N0. 63 C/3, 63 C/11** और **63 C/12** पर आधारित है। यह भाग बुन्देलखण्ड़ क्षेत्र जो विश्व भू–पटल पर कर्क रेखा के उत्तर 24° . 00' – 26° . 30' उत्तरी अक्षांश तथा 78° . 10' – 81° . 30' पूर्वीदेशांतर के मध्य स्थित है। जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 54,560 वर्गकिलोमीटर है। नरैनी बुन्देलखण्ड़ के बॉदा जनपद की एक ग्रामीण तहसील एवं विकासखण्ड़ है। जिसका भौगोलिक विस्तार 24° . 15' उत्तरी अक्षांश तथा 80° . 35' पूर्वीदेशान्तर पर स्थित है, तथा समुद्र तल से 180 मीटर उॅचाई पर बसा है। जिसका क्षेत्रफल 818,94 वर्गकिलोमीटर जो जनपद के 20.14 प्रतिशत भाग पर स्थित है। मानचित्र में बुन्देलखण्ड़ प्रदेश के जनपद बॉदा और विकासखण्ड़ नरैनी की स्थिति एवं विस्तार चित्र संख्या 01 में दर्शित है।

सापेक्ष स्थिति– विकासखण्ड़ के पूर्व में चित्रकूट धाम, पश्चिम एवं उत्तर में विकासखण्ड़ महुआ, दक्षिण में मध्य प्रदेश का छतरपुर जनपद एवं पन्ना जनपद स्थित हैं। यह जनपद मार्ग संख्या 19 बॉदा–सतना पर 39 किलोमीटर तथा पन्ना–फतेपुर मार्ग संख्या 71 पर जो पन्ना जनपद से 65 किलोमीटर तथा जनपद तहसील अतर्रा से 15 किलोमीटर दूर पर स्थित है।

चित्रक्रमांक संख्या 1
भारत व बुन्देलखण्ड प्रदेश मानचित्र पर नरैनी विकासखण्ड की स्थिति

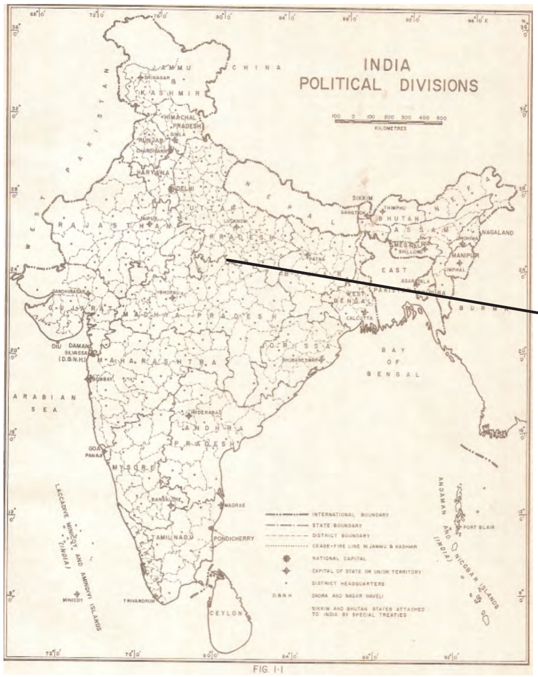

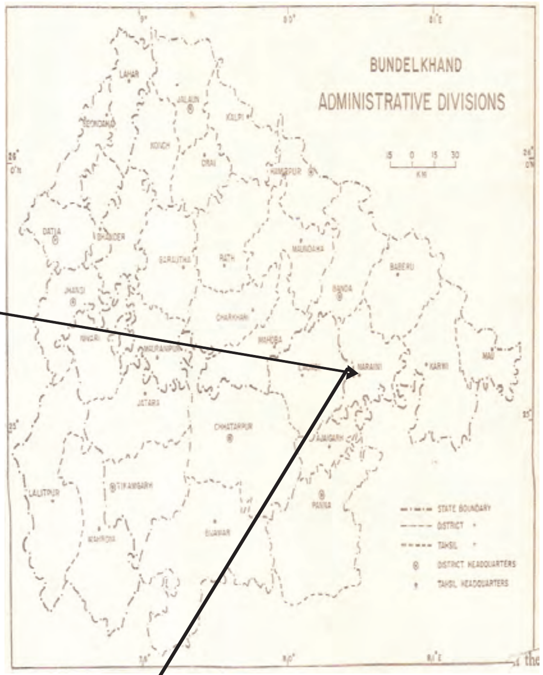

मानचित्र
विकास खण्ड-नरैनी
जनपद-बाँदा

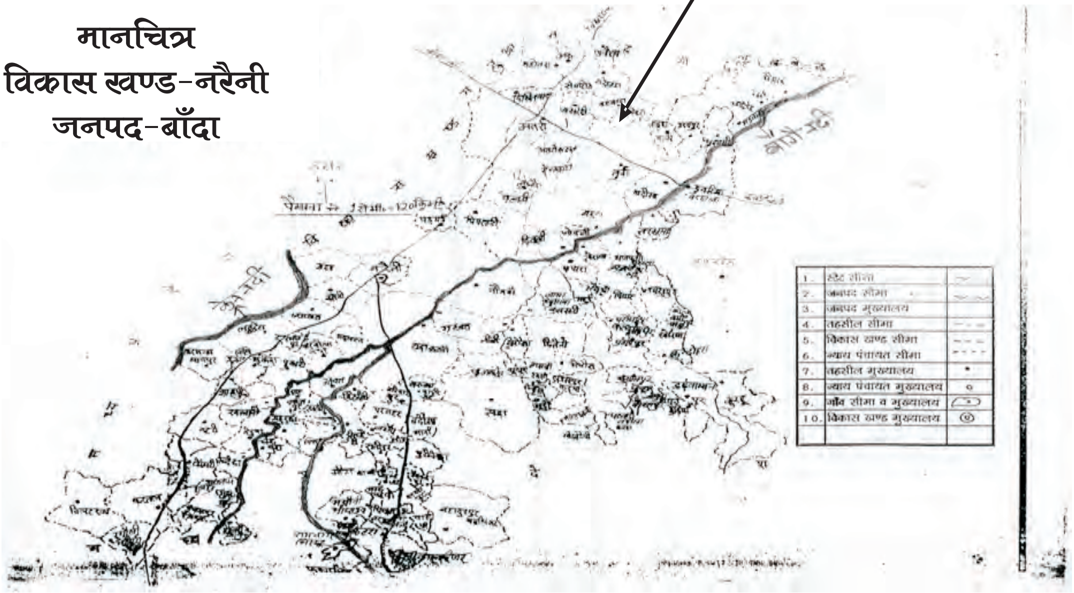

ऐतिहासिक परिचय– नरैनी का उद्भव भू–विकास अत्यन्त प्राचीन है। पूर्व शोध कार्यों, स्थानीय सूचनाओं, कल्पनाओं, मान्यताओं एवं जनश्रुतियों के आधार पर इसके विकास काल का क्रम वेद, पुराणों एवं महाकाव्य काल से ही मिलता चला आ रह है। यह क्षेत्र वनाच्छादित क्षेत्र रहा है, महाभारत काल में नरैनी शुक्तिमती नगरी के परिक्षेत्र के भूभाग के अन्तर्गत था। तत्पश्चात भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन से पहले यह 'चेंदी देश' या 'दाहाल देश' का भूभाग था। मुस्लिम ऐतिहासिक ग्रन्थों में इस क्षेत्र को 'भट देश' या 'भट–गोंड देश' कहा गया। सम्राट अकबर के समय में इस क्षेत्र का कुछ भाग भट गोंड जों कालिंजर तक फैला हुआ था। बुन्देलखण्ड़ के परिसीमन में झांसी के बाद दूसरा ऐतिहासिक दुर्ग कालिंजर रहा है, जो वेदों में वर्णित भूमि है। यह बुन्देलखण्ड़ के महत्वपूर्ण दुर्गों में से एक है। मुस्लिम इतिहासकार फरिस्ता के अनुसार इसका निर्माण सातवीं शताब्दी में हुआ जो चंदेलों के उत्कर्ष में आने के पूर्व यह कन्नौज के प्रतिहारों और त्रिपुरी मध्य प्रदेश कल्चरि शासकों तथा दक्षिण के राष्ट्रकुल शासकों के अन्दर रहा। सर्वप्रथम चंदेल शासक यशोबरमन (925–950) कन्नौज के देवपाल को हरा कर प्राप्त किया। यह सन् 954 के खजुराहो लेख से विदित है कि फिर चंदेल शासक महाराजा धंग (950 से 1002 ई0) तथा महराजा गंड़ (1002–1025) शासन में महमूद गजनवी ने सन् 1022 में आक्रमण किया किन्तु अन्त में भेंटों के अदान प्रदान की सन्धि से मैत्री हो गयी। सन् 1182 में पृथ्वीराज चौहान ने विजय प्राप्त की और सन्धि के अनुसार परमार्द कालिंजरराधिपति बने। 1183 में पुनः परमार्द का महोबा में शासन स्थापित हो गया। इसके बाद कालिंजर में तो आक्रमण कारियों का सिलसिला चलता रहा। सन् 1530–31 में हूमायूॅं ने एक साल तक असफल आक्रमण किये। सन् 1554 में शेरशाह शूरी ने इस दुर्ग को फतह कर लिया, जिस समय भारतीय चन्द्र बुन्देला ने किर्तिदेव की मदद करने के लिए भाई मधुकरशाह को भेजा किन्तु देर हो चुकी थी मधुकरशाह दुर्ग के बाहर से गोला बारी शुरूकर दी सेना को रसद बॉट रहे व गोला बारूद दे रहे शेरशाह शूरी की मैगजीन में एक गोला लगने से उसमें आग लगी जिससे शेरशाह शूरी मारा गया। तब शेरशाह का पुत्र सलीम शाह ने कीर्तिशाह का कत्ल कर दिया।[1]

शेरशाह के पश्चात अकबर ने सन् 1564 में आक्रमण कर कालिंजर में अधिकार किया यह शासन औरंगजेब के शासन तक चला। बुन्देला नरेश महाराजा छत्रशाल ने पुनः सन् 1679 में करम इलाही से जीत कर मुगल शासन से मुक्त कराया, और पण्ड़ित राम कृष्ण चौबे को किलेदारी दे दी। राम कृष्ण के सात पुत्र थे जिनमें कालिंजर क्षेत्र का राज्य विभाजित कर दिया जो आगे चलकर अंग्रेजों के जाल में एक–एक कर फंसते चले गये। सन् 1800 में नवाब अली बहादुर द्वितीय तथा हिम्मत गिरि गोसाईं की सयुक्त सेना ने कालिंजर पर आक्रमड़ करदिया, और सन् 1802 में किले में ही अली बहादुर की मृत्यु हो गयी।

तभी बांदा के पूर्व में ही राजापुर के तुलसीदास और दक्षिण के कालिंजर की पीड़क गाथाओं के बाद जिसे महाभारत काल के चन्द्रबंशी राजा ययाति के पुत्र यदु के वंशजों ने चेदि देश का नाम दिया था। मध्य काल में यह चंदेलों और बुन्देलों का शासन रहा इसलिए यह बुन्देलखण्ड़ का महत्वपूर्ण नगर बना।

पन्ना नरेश महाराजा छत्रशाल ने अपने राज्य का विभाजन तीन हिस्सों में कर दिया, जिसमें बांदा के अर्न्तगत कालिंजर, बदौसा, तरौंहा एवं चित्रकूट के आस पास का क्षेत्र हृदयशाह के हिस्से में आया, तथा बांदा भूरागढ़ जगतराज के हिस्से में जिसमें रसिन गहोरा स्वतंत्र क्षेत्र रहे।

नरैनी का उद्भव एवं विकास– उपरोक्त साक्ष्यों से नरैनी परिक्षेत्र के सैकड़ों वर्षों का इतिहास का पता चलता है कि इस भूमि में अनेकों खूनी क्रान्तियॉ अर्थात युद्ध हुए हैं। भयवश लोगों का पलायन हुआ तथा यह ग्राम–नगर क्षेत्र में उभर कर सामने आया। इस परिक्षेत्र में मुगल काल में हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य अनेक युद्ध हुये। शिवाजी महराज तथा पन्ना के छत्रपाल आदि ने मुगलकाल में युद्ध किये। युद्धों की मार से वहॉ की पीड़ित जनता वाजीराव पेशवा के समय स्योढ़ राज्य से इधर–उधर पलायन करने लगी, जिसके फल स्वरूप ही नरैना काछी नाम का एक व्यक्ति भाग कर नरैनी की एक पहाड़ी के नीचे आ कर बसा। कुछ समय पश्चात पेशवा की फौज का विनास हुआ और उस फौज के एक सरदार का पुत्र जीवित मिला जिसे गढ़ागंगा पुरवा के पाठकों ने शरण दी उक्त पुत्र आगे चलकर वर्तमान समय में अथाई गढी नरैनी के पूर्वज बने। वर्तमान नरैनी, नरैना काछी के नाम से जाना जाता है। एक किद्वन्ती के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि भगवान श्री राम जी वनवास के दौरान इस क्षेत्र के पश्चिमी पहाड़ी पर रूके जिसके कारण नरैनी का प्राचीन नाम नारायणी भी पड़ा। नरैनी नारायणी का अपभ्रंश शब्द है।

उपरोक्त साक्ष्यों से पता चलता है कि नरैनी का नाम कभी नरैना तो कभी नारायणी था। स्पष्ट है कि नरैनी नगर आज का बसा नहीं बल्कि सैकड़ों वर्ष पूर्व एक व्यक्ति के द्वारा एक घर के रूप में बसा था, जो आज एक लघु ग्राम नगर के रूप में परिलक्षित है।

सांस्कृतिक परिचय– मनुष्य एक सांस्कृतिक प्राणी है, जो अपने वातावरण का स्वयम् निर्माण करता है और उस वातावरण में रह कर अपने सांस्कृतिक विकास की नींव रखता है। जिसमें धर्म, शिक्षा, भाषा, आचार–विचार, खान–पान, गृह व्यवस्था एवं स्वयम् की वृद्धि एवं ह्रास आदि सांस्कृति का परिचय हैं। नरैनी का विकसित समीपस्थ क्षेत्र अतर्रा है जहॉ पर नेशनल हाइवे 47 है और झांसी–इलाहाबाद रेल लाइन तथा कानपुर–मानिकपुर रेलवे लइन के अन्तर्गत है, जिस कारण नरैनी का विकास अतर्रा की अपेक्षा अल्प हुआ है। यहॉ उच्च शिक्षा में अध्ययन 1960 से प्रारम्भ है, जबकि नरैनी में उच्च शिक्षा 2004 और परास्नातक शिक्षा 2015 से प्रारम्भ हुई।

धर्म एवं भाषा– नरैनी हिन्दू वाहुल्य क्षेत्र है। यहॉ हिन्दुओं के साथ साथ मुस्लिम समुदाय के लोग एक साथ रह रहे हैं साथ ही साथ इन दो विषम धर्मों के लोगों में अब एक समता सी दिखती है। इन धर्मों के अलावा ईसाई, जैन, सिख आदि समुदाय के लोग सौहार्द के साथ एक दूसरे के सांस्कृति स्वरूप में रंग–ढल कर बढ रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र बुन्देलखण्ड़ में उपान्त होने के कारण यहॉ बुन्देली भाषा का प्रभाव दिखता है। जबकि बुन्देलखण्ड़ के बाहर पूर्व की ओर बघेलखण्ड़ की बघेली, पश्चिम की ओर भदावरी, ब्रजभाषा और मलवीय तथा दक्षिणी भाग में गोडी और दुआब में हिन्दी प्रमुख भाषायें बोली जाती हैं।

अध्ययन क्षेत्र में शहरी करण के कारण यहाँ की क्षेत्रीय भाषा में दिनों दिन कमी आ रही है। इस क्षेत्र में शिक्षा की उन्नति ने यहाँ की बुन्देली भाषा को शुद्ध हिन्दी में बदल दिया है। यह परिवर्तन लगभग 200 वर्षों से जारी है। यहाँ की प्रमुख भाषाएं गहोरा, बगरावत, अघार, बनाफरी, लुधयात ये बुन्देलखण्डी भाषा की ही शाखाएँ हैं। बुन्देलखण्ड़ी भाषा हिन्दी की ही एक शाखा है। मनुष्य गणना की रिपोर्ट में दिये गये भाषाओं के वर्णन से पाया जाता है कि बुन्देलखण्ड़ी भाषा इन्डोयूरोपियन शाखा के संस्कृत कुल की है।

शुद्ध बुन्देलखण्ड़ी भाषा का साहित्य आल्हा खण्ड है इसके अलावा कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है। बुन्देलों के समय यह भाटों द्वारा बोली जाती थी,बृजभाषा और बुन्देलखण्डी भाषा दोनो मिश्रित भाषा हैं।

रीति–रिवाज एवं परम्पराऐं– रीति–रिवाज वह क्षेत्रीय परम्पराऐं होती हैं जो मानव समूह को एक दूसरे क्षेत्र/प्रदेश से प्रथक करती हैं। इन परम्पराओं में गृहस्थ जीवन, रोजी–रोटी, परिवारिक अनुशासन, साहित्य, कला एवं कलाकार आदि सामाजिक परम्पराएँ मानव समूह के रीति–रिवाज कहलाते हैं। इस क्षेत्र के लोग राम और कृष्ण के उपासक है जिस कारण इन्हीं आदर्श पुरूषों के लोकाचार स्वीकार हैं।

नरैनी परिक्षेत्र की परम्पराएँ रामचरित मानस के अनुरूप देखी जाती है। यहाँ के लोक गीत से लोकाचार के पूरे दर्शन तुलसी साहित्य विशेशतः रामचरितमानस, गीतावली, राम लला नहछू, जानकी मंगल तथा पारवती मंगल में लोक जीवन, लोक व्यवहार व लोकरीतियों से यहाँ का जीवन बंधा है।

भूगोल एक विषय

रमाकान्त द्विवेदी
प्रवक्ता, भूगोल विभाग

विगत वर्षो कि अपेक्षा भूगोल विषय वर्तमान स्वरूप में एक आकर्षक विषय के रूप में उभर कर सामने आया है। भूगोल एक वैज्ञानिक उपागम का विषय है और इसकी तैयारी के लिए 'रटने की प्रवृति' नहीं, बल्कि 'समझने की प्रवृति' पर आधिक बल दिया जाना आवश्यक है। एक ओर जहाँ वैज्ञानिक आधार होने के कारण इस पर पकड़ बनाना ज्यादा आसान है और कला वर्ग एवं विज्ञान के अन्य विषयों की तुलना अधिक अंक अर्जित करना सम्भव है।

पूर्व वर्षों की अपेक्षा हाल के वर्षों में स्थानीय छात्र/छात्राओ का भूगोल विषय बेहद लोकप्रीय विषय के रूप में उभरा है। महाविद्यालय में स्नातक कक्षा सन् 2005 से प्रारम्भ हुई जिसमें मात्र 05 छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया परन्तु हाल के वर्षों में छात्र/छात्राओं की संख्या 30 से 60 और 80 से 100 तक पहुँच गयी। आनेवाले समय में महाविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर भूगोल विषय की आवश्यकता महशूस की जा रही है।

भूगोल का अध्ययन करने वाले छात्र/छात्राओं से भी अधिक यह विषय उन अभ्यर्थियों द्वारा पसन्द किया जा रहा है, जो दूसरे विषय–धाराओं से आए हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इस विषय में अधिक अंक प्राप्त करने की संभावना सहज ही उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती है। भूगोल का विषय अत्यन्त विविधतापूर्ण है। इसके पाठ्यक्रम में शामिल सामग्री में मानविकी और भौतिक दोनों ही दृश्य घटनाओं का अध्ययन किया जाता है, जिस कारण यह कला और विज्ञान के विद्यार्थियों की रूचि का विषय बना हुआ है। इसके एक भाग में भू–आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, समुद्र विज्ञान तथा जीव भूगोल आदि वैज्ञानिक प्रकृति वाले खण्ड़ हैं तो दूसरे भाग में मानव पर्यावरण सम्बन्ध, जनसख्या, आर्थिक कियाएं, एवं अधिवासों का अध्ययन किया जाता है। इसि कारण यह विषय तमाम विषय–धाराओं के विद्यार्थियों को अपनी पसंद का कुछ न कुछ मिल जाता है। भूगोल में मानचित्रकला का खण्ड़ तो विज्ञान के साथ गणित की अवधारणा को भी समाहित करता है। जिस कारण कुछ विद्यार्थियों को भूगोल का कोई न कोई खण्ड़ अपेक्षाकृत कठिन भी लगता होगा। विज्ञान व इंजीनियरिंग के छात्र/छात्रओं को मानव भूगोल और साहित्य व सामाजिक विषय के छात्रों को भौतिक भूगोल अथवा मानचित्रकला काफी कठिन लगता होगा।

प्राकृतिक भूगोल (Physical Geography):–

प्राकृतिक भूगोल या भौतिक भूगोल के अंतर्गत चार उपखण्ड हैं जिनमें भू–आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, समुद्र विज्ञान तथा जीव भूगोल यह चारो खण्ड वैज्ञानिक प्रकृति के है, जिसमें आधारभूत वैज्ञानिक अवधारणाओं जैसे द्रव्यमान, बल, ताप और दाब, घोलीकरण किया, एवं गैसीय संगघटन एवं संरचना के साथ उष्मा–गतिकी, घूर्णनगतिकी इत्यादि जानकारी आवश्यक है। जो विज्ञान वर्ग के छात्रों का यह खण्ड अपेक्षाकृत सरल हो सकता है, जबकि मानविकी के विद्यार्थिंयों को समझने व याद करने में काफी मशक्कत करनी पड सकती है।

मानव भूगोल (Human Geography):–

भूगोल की यह शाखा अपने नाम से ही विदित होती है कि यह खण्ड मानविकी **(Humanities)** के विद्यार्थियों की अभिरूचि के अधिक अनुकूल है। इस खण्ड के अन्तर्गत चार खण्ड हैं– जिसमें मानव पर्यावरण सम्बन्ध, जनसंख्या, आर्थिक कियाएं, तथा अधिवास। इस खण्ड के लिऐ भी छात्र/छात्राओं को समझ बनाने की प्रवृति का अपना महत्व है। विशेषकर जनसंख्या तथा आर्थिक कियाओं के अन्तर्गत छात्र को अनेक क्षेत्रों, स्थानों, जनजातियों, प्रजातियों तथा औद्योगिक संगठनों के नाम मिलेंगे, जो आपके लिए बिलकुल नए हो सकते हैं। इन तथ्यों कि संख्या हजारों में होगी। जाहिर है कि इतने विवरणों को याद करना तथा याद रखना एक चुनौती सी होगी।

भारत का भूगोल (Geography of India):–

यह खण्ड भूगोल का सबसे महत्वपूर्ण खण्डों में से एक है। करण यह कि इसकी उपयोगिता भू–आकृतिक, अपवाह, जलवायु, मृदा एवं प्राकृतिक वनस्पति, के साथ आर्थिक आधार स्वरूप में खनिज एवं उर्जा संसाधान, जलीय संसाधन, वन संसाधन, सिंचाई, कृषि एवं उद्योग, व्यापार एवं जनसांख्यिकीय विशेषताएं साथ ही साथ पर्यावरणीय समस्याएं, विकास समस्या एवं क्षेत्रीय योजना आदि सम्मलित है।

कैरियर– मानविकी के अन्य विषयों कि अपेक्षा भूगोल ज्यादा रोजगार के अवसर प्रदान करने वाला विषय है। हला कि विदेशों में तो यदि कोई छात्र/छात्रा भूगोल विषय से स्नातक व परास्नातक हैं तो वह प्लानिंग के इंजीनियर होते हैं। भूगोल का जानकार विद्यार्थी वर्तमान समय में अनेकों रोजगार के अवसर तलास सकता है– जैसे एक शिक्षक से लेकर व्याख्याता, प्लानर (इंजीनियर), सर्वेक्षक एवं मानचित्रकार और आईटी के छात्र/छात्राओं के लिए भूगोल एक महत्वपूर्ण और रूचिकर विषय के रूप में उभर कर माने आया है, GIS, GPS and RS जैसी तकनीकि ने भूगोल में एक नई क्रान्ति सी ला दी है जिससे इस विषय में रोजगार तलासने के औसर और भी बढ़ गये हैं।

अम्ल –वर्षा

पूजा सिंह गौतम

प्रवक्ता, रसायन विज्ञान विभाग

अम्ल वर्षा की कहानी 20 वीं शदी के दूसरे दशक से प्रारम्भ होती है अमेरिकी वैज्ञानिक हाल बी0एच0 कूपर और जे0एस0 लोपेज का मानना है कि अम्ल वर्षा की सूचना देने का श्रेय लीड्स विश्वविद्यालय इंग्लैंड के चार्ल्स फ्रोथर और आर्थर जी0 रूस्टीन ने 1911 में बताया था। अम्लीय वर्षा प्राकृतिक रूप से अम्लीय होती है। इसका कारण यह है कि कार्बन डाई ऑक्साइड जो पृथ्वी के वायुमण्डल में प्राकृतिक रूप से विद्यमान है जो जल के साथ क्रिया करके कार्बोनिल अम्ल बनाता है अम्ल वर्षा का अम्ल दो प्रकार के वायु प्रदूषणों से आते है। सल्फरडाई ऑक्साइड और NO ये प्रदूषण प्रारंम्भिक रूप से कारखानों की चिमनियों व स्वाचालित वाहनों से उत्सर्जित होकर वायुमण्डल में मिल जाते है।

$$H_2O+CO_2 \quad H_2CO_3$$

वर्षा जल में अम्लों की बड़ी मात्रा को अम्लीय वर्षा कहा जाता है प्राकृतिक कारणेंा से भी शुद्ध वर्षा का जल अम्लीय होता है इसका प्रमुख कारण वायुमण्डल में मानवीय क्रिया कलापों के कारण सल्फर ऑक्साइड व नाइट्रोजन ऑक्साइड से क्रिया करके अधिक उत्सर्जन के द्वारा बनती है यही गैसे वायुमण्डल में पहुंचकर जल से रसायनिक क्रिया करके सल्फेट तथा सल्फ्यूरिक अम्ल का निर्माण करती है जब यह अम्ल वर्षा जल के साथ धरातल पर पहुंचता है तो इसे अम्ल वर्षा कहते है। शुद्ध जल का पी0एच0 मान 5.5 से 5.7 के बीच होता है अम्लीय वर्षा जल जिसका पी0एच0 मान 5.5 से कम होता है यदि जल का पी0एच0 मान 4 से कम हो तो जल जैविक समुदाय के लिए हानिकारक होता है।

साक्षात्कार की तैयारी कैसे करें

श्री लक्ष्मीकान्त मिश्रा
प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग

''निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में केवल व्यक्ति की योग्यता ही नही अपितु उसका सर्वागीण विकास अपरिहार्य है। वस्तुतः साक्षात्कार के समय साक्षात्कार कर्ता उम्मीदवार की बाह्य दृष्टि एवं अन्तःकरण के द्वंद्व को ही परखना चाहता है। अतएव यहॉ उम्मीदवार के लिए परिवेश के प्रति सोच, समस्याओं की ओर रूझाान, आत्मबोध, अपना सही प्रस्तुतीकरण, प्रत्युत्पन्नमतित्व आदि जैसे महत्वपूर्ण गुण ही सहायक होते हैं।''

किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा का अंतिम पड़ाव साक्षात्कार है और यदि आप इसमें सफल हो जाते हैं तो आपकी कल्पना एवं परिश्रम दोनों को मूर्त रूप मिलता है। वस्तुतः कितनी रोमांचक घड़ी होती है वह जिसमें आपकी सफलता की पुष्टि होती है। इसलिए साक्षत्कार में सम्मिलित होने वाले उम्मीदवारों को मनोवैज्ञानिक एवम् तर्कपूर्ण ढंग से अपने आपको तैयार करना चाहिए और साथ ही प्रतियोगियों को अपने सहज एवं स्वाभाविक गुणों को भूलकर भी नहीं दबाना चाहिए।

सामान्यतया साक्षात्कार में उपस्थित होने के लिए आपको स्वाभाविक प्रस्तुतिकरण, अपना एवम् अपने परिवेश के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण, विषय–वस्तु, समसामयिक घटनाओं (राष्ट्रीय एवंम् अन्तर्राष्ट्रीय) का विश्लेशणात्मक अध्ययन, अभिरूचियों की सही समझ, पूर्व व्यवसाय (यदि कोई हो) का ज्ञान, साक्षात्कार दे रहे व्यवसाय की प्राथमिकता आदि पहलुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

अब प्रश्न उठता है कि आपको साक्षात्कार की तैयारी कैसे आरंभ करनी चाहिए, किन–किन बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए। यहॉ सर्वप्रथम यह स्पष्ट होना चाहिए कि साक्षात्कार के माध्यम से आपके व्यक्तित्व को परखा जाता है, न कि आपकी योग्यता को। जबकि आपके व्यक्तित्व के प्रतिनिधित्व में किसी बात के प्रति आपकी सोच और अभिव्यक्ति ही सहायक सिद्ध होगी। वैसे, किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण किसी विशेष तैयारी के द्वारा संभव नहीं है, बल्कि यह एक सतत् प्रक्रिया है जिस पर उसके भौगोलिक परिवेश से लेकर सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक पर्यावरण तक का प्रभाव पड़ता है। यदि आप इन मूलभूत अवधारणाओं को ठुकराकर किसी नवीन एवम् कृत्रिम स्वभाव का परिचय देना चाहेंगे, तो वह आपके हित में नकारात्मक ही सिद्ध होगा।

<u>स्वाभाविक प्रस्तुतिकरण–</u>

सर्वप्रथम यह देखने को मिलता है कि साक्षात्कार के लिए चयनित उम्मीदवार उचित प्रस्तुतिकरण के लिए वेश–भूषा के प्रश्न को लेकर काफी पशोपेश में रहते हैं। वस्तुतः इसमें उम्मीदवार को गलत सलाह देने वाले ही अधिक परेशानी पैदा करते हैं। वैसे इस हेतु आपको साधारण सुझाव है कि आप अपने लिए कपड़ों का चुनाव मौसम और अपने पर्यावरणीय स्थिति के अनुसार ही करें।

यदि आप गर्मी के मौसम में साक्षात्कार देते हैं तो पैंट–शर्ट का ही प्रयोग करें तो सर्वोत्तम होगा। इसको पहनकर आप स्वयं को सहज महसूस करेंगे। जहॉ तक कपडों के रंग का प्रश्न है, तो उसके लिए आप अपने शरीर के रंग को ही प्राथमिकता देकर चयन करें और इसमें आप मौसम का भी ध्यान रखें। निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि आप उसी परिधान को धारण करें जिससे आपका रूप–रंग अधिक से अधिक आकर्षक और समयानुकूल दिखे। अब प्रश्न उठता है कि अपने आपको साक्षात्कार मंडल के समक्ष किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए। इसके लिए यहॉ ध्यान रखें कि जैसे ही अन्दर से बुलाया जाय, वैसे ही आदेश लेकर साधारण भाव से थोड़ा सा मुस्कुराते हुए कमरे में प्रवेश करके वहॉ उपस्थित सज्जनों का सामूहिक अभिवादन करें। बैठने का आदेश पाते ही धन्यवाद देकर अध्यक्ष के सामने की कुर्सी पर बैठ जाएं। साथ ही सदैव ध्यान रखें कि आपके चेहरे पर स्वाभाविक भाव बना रहे।

परिवेश के प्रति स्पष्टता

यहॉ परिवेश का अभिप्राय है कि आपको अपने नाम का पर्याय, मिथक अथवा उस नाम का यदि कोई महान व्यक्ति हुआ हो तो उसके सम्बन्ध में विशेष जानकारी भी आवश्यक होती है यथा, आप जिस राज्य, जिला, प्रखण्ड एवं गॉव के हैं उसकी भौगोलिक दशा, ऐतिहासिक महत्व, सामाजिक स्थिति व आर्थिक क्रियाकलापों का ज्ञान होना चाहिए। ज्ञातव्य है कि यदि आपके परिवेश की कोई ज्वलंत समस्य अथवा अविकसित होने की कोई ज्वलंत समस्या है तो उसका क्या कारण है तथा उसका निराकरण आपकी समझ में कैसे किया जा सकता है। उपरोक्त प्रश्नों का जवाब अप्रत्यक्ष रूप से अपरिहार्य होता है क्योंकि ये बातें आपके लिए काफी मौलिक हैं तथा उसकी जानकारी की अपेक्षा आप से की जाती है।

विषय–वस्तु

जहॉ तक विषय वस्तु का प्रश्न है तो उससे कोई लंबा चौड़ा प्रश्न नहीं पूॅछा जाएगा, क्योंकि उसमें अच्छा करके ही आप साक्षात्कार तक पहुंचे हैं। हॉ, एक बात अवश्य है कि विषय वस्तु से मौलिक, व्यावहारिक एवं उससे सम्बन्धित कोई वर्तमान समस्या है तो उससे प्रश्न पूछे जाने की संभावना बनती है। उदाहरण के रूप में चुनाव आयोग, उच्चतम न्यायालय आदि से सम्बन्धित व्यावहारिक बातें अथवा उसके कार्य सम्बन्धी व्यावहारिक बातें, पर्यावरणीय संकट, नई आर्थिक नीति, साम्प्रदायिकता, जातिवाद से जुड़ी समस्याएं आदि प्रमुख हैं। अतः आप अपने विषय के मौलिक एवं व्यावहारिक पहलुओं पर विशेष ध्यान दें।

समसामयिक परिप्रेक्ष्य

आज राष्ट्रीय एवम् अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अनेक समस्याएं चर्चाओं में है। इसके लिए आप वर्तमान सभी समस्याओं का गहन अध्ययन करके अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट कर लें। साथ ही प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का अध्ययन भारत के सापेक्ष में भी करें और उसका भारत पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नाकारात्मक दोनों प्रभावों के प्रति अपना दृष्टिकोंण स्पष्ट करें। इसके अतिरिक्त विश्व राजनीति की दिशा और भविष्य का भी अध्ययन तर्कसंगत ढंग से करें। वर्तमान में भारत के आर्थिक क्षेत्र में व्यापक सुधार हुआ है और चल भी रहा है। इसलिए आप सुधारों के प्रभाव तथा परिणाम को सुव्यवस्थित ढंग से तथा इनके अन्तः क्षेत्रीय विश्लेषण (कृषि का उद्योग से या लौह इस्पात उद्योग का पेट्रोलियम से आदि–आदि) के प्रति भी अपनी सोच निश्चित करें। इन सभी के अतिरिक्त उम्मीदवारों से ऐसे प्रश्न भी पूंछे जाते हैं जो सरकारी नीतियों, नीति निर्धारण और वर्तमान में अपनायी जा रही नीति के दूरगामी परिणामों के सम्बन्ध में होते हैं। हालांकि उम्मीदवार इन प्रश्नों का उत्तर देने में संकोच करते हैं। वे सोचते हैं कि सरकारी सेवा प्राप्त करने के लिए उत्सुक व्यक्ति सरकारी नीति की आलोचना कैसे करें साथ ही उम्मीदवारों को यह भी डर बन जाता है कि विषय वस्तु का सही विश्लेषण करने पर उसे कहीं सरकार विरोधी न समझ लिया जाए अथवा वही किसी विशेष राजनीतिक दल का समर्थक न मान लिया जाए। ऐसे प्रश्न का उद्देश्य यह होता है कि उम्मीदवार को वर्तमान गतिविधियों की सही जानकारी है अथवा नहीं। ऐसे प्रश्नों से भयभीत होने के बजाय ध्यान से सोच विचार कर उत्तर देना चाहिए। यहॉ यह ध्यान रहे कि सभी प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट एवम् सीधा होना चाहिए, ताकि आप स्वयं अपने जवाब से घिर न जाएं साथ ही विवाद से यथासंभव बचना चाहिए। यदि आप किसी प्रश्न का जवाब सही ढंग से नहीं दे सकते हैं तो स्पष्ट शब्दों में ना कहने में कोई हर्ज नहीं है। इसके विपरीत यदि आप अधूरा अस्पष्ट जवाब देते है तो इसका मंडल पर अच्छा असर नहीं पड़ता है। कुल मिलाकर प्रश्नों का तथ्यपूर्ण तथा सही–सही उत्तर देना ही सर्वोत्तम तरीका है जिसके द्वारा साक्षात्कार मंडल के सदस्यों को भी प्रभावित किया जा सकता है।

अभिव्यक्ति का महत्व

विचाराभिव्यक्ति स्वयं में एक कला है और इसके लिए भाषा पर पकड़ आवश्यक है। एक बात और ध्यान देने योग्य है कि आप साक्षात्कार की तैयारी नियमित अभ्यास द्वारा करें। कुछ उम्मीदवार साक्षात्कार मंडल का सामना करते ही शिथिल हो जाते हैं और ठीक प्रकार से बोल नहीं पाते। यह स्थिति आपकी न हो, इसलिए अभिव्यक्ति का अभ्यास आरंभ में ही कर लेना ठीक होता है। साक्षात्कार के प्रति अति संवेदनशील न रहें, बल्कि सामान्य भाव से इसका सामना करें। यदि कोई आपके व्यक्तिव के किसी खास कमी की ओर इंगित करता है तो घबराइए मत और न ही उसके प्रति अधिक सोचिए, क्योंकि अल्पकाल में इस पर नियंत्रण नही पाया जा सकता है और आपकी अत्यधिक सतर्कता आपको साक्षात्कार के समय सहज नही रहने देगी।

हिन्दी माध्यम के छात्रों और खासकर बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रतियोगियों के लिए एक विशेष सुझाव यह है कि यदि वे अपनी परीक्षा का माध्यम हिन्दी रखे हुए हैं तो साक्षात्कार के समय साक्षात्कार मंडल द्वारा अंग्रेजी में भी प्रश्न पूछने पर हिन्दी में ही जवाब दें। अनेक बार बहुत से उम्मीदवारों ने साक्षात्कारकर्ता के प्रश्नों का जवाब अंग्रेजी में देते है,वे अपनी बातों को ठीक स्पष्ट नहीं कर पाते तो इससे संभावित सफलता हाथ से निकल जाती है।

यदा—कदा साक्षात्कार मंडल आपके ऊपर मनोवैज्ञानिक दबाव भी डालेंगे, किन्तु उस परिस्थिति में आप धैर्यपूर्वक उनके प्रश्नों का जवाब दें। इस प्रकार सदैव यथार्थवादी बने रहें, सफलता अवश्य मिलेगी।

जीवन के प्रति तत्परता

श्रीमती उमा चतुर्वेदी
प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग

हम हो गये तैयार हमें अब आगे जाना है, नया इतिहास बनाना है नया इतिहास सजाना है,
कुछ करके दिखाना है हमें अब आगे जाना है, एक आयाम पाना है सृजता को सजाना है,
हम हो गये तैयार हमें अब आगे जाना है, अतीतों के झरोंखें को अब प्रकाश में लाना है,
हमें इतिहास बनाना है हमें इतिहास बनाना है, सृजन शीलता, विवेक शीलता, श्रम शीलता
प्रगति पथ पर अब आगे आना है, लोगों को दिखाना है दुनिया को समझाना है,
सृजता की कसौटी पर कसेंगे हर युवा चेहरे, भावों के उदगारों पर लगेंगे हर समय कोड़े
निश्क्षलतावादी विचारधारा स्वतंत्रतावादी विचारधारा, सामन्तवादी विचाराधारा, भाईचारावादी विचारधारा,
हिन्दुस्तानी विचारधारा, भारतीय विचारधारा से ओतप्रोत होकर सामाजिक समरस्ता की बयार बहाना है
समय के साथ एकता दिखाना है जनसैलाब पर आना है, अपने भारत का गौरवपूर्ण कारवां बनाना है
पश्चिम की हवाओं ने पूरब को इस कदर रौंदा है कि संस्कृति और सभ्यता को टूट गया घरौंदा है
मानवता का इस कदर हुआ ह्रांस है, आज के राम, लक्ष्मण को रहने के लिए महल दे दिया है,
और पूर्वजों को रहने के लिए वनवास है, समय के साथ हमकों तो एकता दिखाना है
अपने भारत का कारवां सजाना है, हमें इतिहास गाना है वैदिक संस्कृति को बुलाना है,
बुराईयों को हटाना है मतभेदों को भुलाना है, हमें एक रूप लाना है, हमें सृष्टि को सजाना है,
हमें समय की रफ्तार को पाना है, समय को बदलकर दिखाना है,
सीताराम समर्पण में समर्पित होकर जाना है, हमें महाविद्यालय को बढ़ाना है,
इसके विस्तार एवं विकास को आगे ले जाना है,
नया इतिहास बनाना है, नया इतिहास बनाना है।

कविता

डॉ0 शिवाकान्त त्रिपाठी
(विभागाध्यक्ष)
शिक्षा संकाय

भाग्य के हाथों ठगा हुआ इंसान हूँ,
राह से भटका हुआ भगवान हूँ।
सब्र सनातन से यही कहते मिले,
आत्मा, परमात्मा का अंश है।

सच अगर मैं मान लूं इस बात को,
तब प्रभु वाला ही मेरा वंश हैं।
फिर यह विषमता क्यूँ यहाँ साकार है,
एक ही धातु के फिर दो रंग क्यों।
एक निर्गुण सर्वव्यापी है यहाँ।
एक के अवगुण लगा है संग क्यों।
एक जग के भाग्य का सृष्टा बना,
दूसरा भोगी बना संसार में,

किस लिए हम दो अलग आंके गये।
भेद क्यों यह न्याय के व्यापार में।
ब्रह्म मैं ब्रह्म का मोहताज क्यों
किसलिए खुद मैं अपने से दूर हूँ
जन्म ले भगवान के भण्डार से
कर्म के हाथों छला इंसान हूँ,
भाग्य के हाथों ठगा इंसान हूँ,
राह से भटका हुआ भगवान हूँ।

ग्लोबल वार्मिंग या ग्लोबल वार्निंग
अथवा
ग्लोबल वार्मिंग–धधकती धरती

श्रीमती रोजी जहां
प्रवक्ता, रसायन विज्ञान विभाग

आजकल यह बात आम होती जा रही है कि मौसम वैज्ञानिकों द्वारा की गयी भविष्य वाणियां महज एक अनुमान सी नजर आती है पर यह बात वास्तविकता में इतनी सामान्य नहीं है। ग्लोबल वार्मिंग क्या बला है, इसका अनुमान शायद ही सब को हो यह महज एक वार्ता का बिन्दु न होकर के पृथ्वी के आने वाले समय में होने वाले खतरे की घण्टी है। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या निरंतर एक रौद्र रूप धारण करती जा रही है आखिर क्या कारण है कि हमारी वसुंधरा का तापमान निरंतर बढ़ता जा रहा है। मौसम वैज्ञानिक पर्यावरण विद् सभी हैरान है सभी निरंतर इस बात का चिंतन करते दिख जायेंगे की इस विकराल समस्या से कैसे निपटा जाय।

सही तौर पर देखा जाय तो मुझे तो सिर्फ एक ही बात नजर आती है कि यह मानव के असंतुलित क्रियाकलापों का परिणाम ही है कि उसने अपने समक्ष इन जटिल समस्याओं को लाकर खड़ा कर दिया है खासकर औद्योगिक क्रांति के बाद जिस तरह से ईधनों जैसे कोयला पेट्रोलियम आदि का दोहन हुआ है उससे वायुमण्डल में कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा में अप्रत्याशित वृद्धि हुयी है इसके अतिरिक्त अगर दूसरे पक्ष पर नजर डाली जाय तो अन्य ग्रीन हाउस गैसे जैसे–मीथेन का भी खूब उत्सर्जन हुआ है। वायुमण्डल में ग्रीन हाउस जैसी गैसों की बढ़ती मात्रा ही ग्लोबल वार्मिंग के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है युनाईटेड नेशन्श इण्टरगोवरमेंटल पैनल क्लाईमेट चीन (IPCC) के अनुसार पृथ्वी के वायुमण्डल में कार्बनडाई ऑक्साईड की मात्रा में जिस तरह वृद्धि हो रही है उसके आधार पर यह कहना गलत नहीं होगा की शताब्दी के अन्त तक पृथ्वी के तापमान में 3–10 डिग्री फारेन्हाइट तक वृद्धि हो सकती है वनों की अंधाधुंध कटाई आग में घी का काम कर रही है। 1950 में वायुमण्डल की कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा 315 के आस–पास थी वहीं यह मात्रा अब 375 पीपीएम से अधिक हो गयी है यदि यह वृद्धि इसी तरह से जारी रही तो सन् 2100 तक 650 से 950 पीपीएम तक हो जायेगी। इस भयावह समस्या का प्रभाव पिघलते समुद्री ग्लेशियर, जल स्तर के बढ़ने एवं परिवर्तित मौसम के तौर पर स्पष्ट दृष्टिगत होता है IPCC के एक अन्य सर्वेक्षण के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव जैव मण्डल पर भी असर डाल रहा है इसका साक्ष्य विलुप्त होते पशु पक्षियों की प्रजातियां एवं वनस्पतियाँ निर्विरोध रूप से हमारे समक्ष है अतः ग्लोबल वार्मिंग के वजह से यह धरती आने वाली पीढ़ियों को शायद अपने आँचल में स्थान न दे पाये।

वृक्ष धरा के है आभूषण, करते है दूर प्रदूशण
रक्षा कर बचाव करें, धरती का उद्धार करें।

ऊर्जा संरक्षण एवं उसकी बढ़ती आवश्यकता

श्री रत्नेश मिश्रा
शैलेन्द्र विश्वकर्मा
श्री अंजनी द्विवेदी
बी0एड0 छात्र
प्रवक्ता बी0एड0 विभाग

विकास प्रक्रिया आरम्भ करने और उसे जारी रखने के लिए ऊर्जा अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है आर्थिक विकास से ऊर्जा का इस्तेमाल मात्रा एवं गुणवत्ता दोनों ही के लिहाज से बढ़ता है ऊर्जा की मांग और आपूर्ति में भारी अन्तर होने के कारण भारत जैसे विकासशील देश के लिए ऊर्जा उत्पादन के साथ–साथ ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता अत्यन्त प्रासंगिक है खेती करने से लेकर उद्योग स्थापित करने तक कि दिशा में ज्यों –ज्यों प्रगति होती जा रही है त्यों–त्यों ऊर्जा के उपयोग में बढ़ोत्तरी होती जा रही है फलस्वरुप आज विश्व के अधिकांश विकसित एवं विकासशील देश ऊर्जा की कमी से प्रभावित हो रहे है ऊर्जा के सीमित साधनों तथा इनकी निरन्तर बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए विश्व के समस्त देशों का ध्यान सम्भावित ऊर्जा संकट की ओर आकृष्ट हुआ है। ऊर्जा संकट का अभिशाप है ऊर्जा के उपलब्ध साधनों का मितव्यता से उपयोग करना। ऊर्जा श्रोत सीमित है लेकिन हमारी आवश्यकताएं असीमित है मानव की प्रत्येक प्रक्रिया ऊर्जा व्यय पर आधारित है जिसका मूल्य अंतर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय बाजार में खनिज तेल या कोयले की निरन्तर मांग के आधार पर बढ़ता है ऊर्जा समस्या का समाधान ऊर्जा के नये–नये वैकल्पिक साधनों की खोज से तो होगा फिर भी यदि हम उपलब्ध ऊर्जा का संरक्षण कर सकें तो यह ऊर्जा बचत हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं ऊर्जा संरक्षण के अन्तर्गत निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं–

1. ऊर्जा की मात्रा की ओर ध्यान दिये बिना कुछ योजनाओं को पूर्णरुपेण समाप्त कर ऊर्जा की बचत करना जैसे उत्पादन योजना रद्द करना, स्वचालित वाहन न खरीदना आदि।

2. पूर्व नियोजित योजनाओं को कार्यान्वित करते समय उनकी गुणवत्ता में कमी करके ऊर्जा की बचत करना जैसे कार्यालय भवनों में ताप स्थायी कम करना, धीमी गति से वाहन चलाना, कम शक्ति ईंजन की कार खरीदना।

ऊर्जा संरक्षण के यह जानना आवश्यक है कि किस प्रकार विभिन्न यांत्रिक इकाइयों मशीनों तथा उनकी क्रियाओं को चालू रखने के लिए कम से कम ऊर्जा से अधिक से अधिक कार्य क्षमता प्राप्त की जा सकती है। जैसे क्या भट्टियों को जलाये जाने वाले कोयले के प्रत्येक कण से प्राप्त ऊर्जा का हम सही उपयोग कर पाते है या नहीं । आजकल अधिकांश उद्योगों में भाप की आवश्यकता रहती है। यदि इन्हीं उद्योगों में अधिक दाब वाली भाप से पहले विद्युत जनरेटर द्वारा विद्युत उत्पादन कर लिया जाय शेष कम दाब वाली भाप को उत्पादन कार्य हेतु उपयोग में लाया जाय तो प्रत्येक औद्योगिक प्रतिष्ठान अपनी कुल विद्युत खपत का 50 प्रतिशत से 80 प्रतिशत भाग स्वयं के स्तर पर ही पूरा कर सकता है।

ऊर्जा संरक्षण की दृष्टि से निम्न उपायों को अपनाना तर्कसंगत होगा श्रोतों का सही उपयोग।

1. ऊर्जा के घरेलू साधनों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हो।
2. वैकल्पिक ऊर्जा साधनों जैसे सौर, पवन, ज्वारीय एवं भूतापीय ऊर्जा का उपयोग किया जाय।

ऊर्जा के सम्बन्ध में भारत की वर्तमान स्थितिः–

भारत में ऊर्जा की मांग और उसकी आपूर्ति के बीच अंतराल कम करने के लिए सबसे अधिक लागत विधि ऊर्जा दक्षता को प्रोत्साहन देना तथा संरक्षण करना इस पर गंभीरता से विचार करने के पश्चात भारत सरकार ने ऊर्जा संरक्षण अधिनियम 2001 बनाया । इस अधिनियम ने कानूनी रूपरेखा संस्थागत व्यवस्था और राज्य स्तर पर विनियामक प्रक्रिया प्रदान की गयी है जो भारत में ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने का अभियान प्रारम्भ कर सके जिससे बिजली की बचत हेतु विभिन्न योजनाओं, जागरूकता अभियान बच्चों की प्रतियोगिता आदि शामिल है वर्तमान ऊर्जा स्थिति देखने से पता चलता है कि थर्मल पावर कुल ऊर्जा उत्पादन में 64 प्रतिशत योगदान देता है। जल विद्युत 24 प्रतिशत तथा परमाणु ऊर्जा 2.9 प्रतिशत और पवन ऊर्जा 1 प्रतिशत योगदान है देश में उत्पादित कुल ऊर्जा की मात्रा लगभग 23 प्रतिशत वितरण में ही नष्ट हो जाती है हालांकि वास्तविक छवि इससे अधिक है उत्पादित ऊर्जा का औसत टेरिफ मूल्य 2.12 किलो वाट है भारत की केन्द्र सरकार सन 2012 तक प्रतिवर्श प्रतिव्यक्ति 1000 किलो वाट ऊर्जा खपत लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपना ध्येय बनाया था जो आज ऊर्जा विकास सम्बन्धित बचत में निरन्तर वृद्धि की ओर अग्रसर है एवं भारत की सरकारें ऊर्जा की बचत एवं पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए प्रयासरत है।

बुद्धि का विकास कीजिए

डॉ0 मनीष कुमार श्रीवास्तव
प्रवक्ता
राजनीति विज्ञान विभाग

हमने बचपन मे शेर और खरगोश की कहानी पढ़ी थी उसमें खरगोश अपनी सूझ–बूझ द्वारा शेर को कुंए में कूदने को विवश कर देता है और वन के समस्त जीव जन्तुओं को दुर्दान्त सिंह के आतंक से मुक्ति दिला देता है। कहानी का निष्कर्ष इस प्रकार दिया जाता है –''जिसके पास बुद्धि है उसी के पास शक्ति है। देखो न! खरगोश द्वारा दुर्दान्त सिंह का वध कर दिया गया।''

मानव और पशु के मध्य अन्तर स्थापित करते हुये प्रायः यह स्थापना की जाती है कि मानव को बुद्धि नामक विशेष शक्ति प्राप्त है, जो पशु को प्राप्त नहीं है और बुद्धि के बल पर ही मनुष्य सिंह सदृश हिंसक हाथी जैसे विशालकाय पशुओं को भी अपने वश में कर लेता है। वस्तु–स्थिति यह है कि बुद्धि सम्पन्न मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करता हुआ अपनी रक्षा करने के साथ विश्वविजय करने का दम भरता है। मानव की इसी विशिष्टता को लक्ष्य कर के कवि वृन्द ने कहा है कि –

जाको बुद्धि बल होत है, ताहि न रिपु की त्रासु।
घन की बूँदे का करि सके, सिर पर छाता जासु।।

बुद्धि वस्तुतः समस्त क्रिया कलापों की संचालिका है। विवेक वृत्ति द्वारा बुद्धि नीर–छीर निर्णय करती है और सही समय पर सही निर्णय लेकर सही काम को सही ढंग से करती है। जो मनुष्य इस प्रकार का व्यवहार करने में असमर्थ है, उसको हम पशुवत् कहते हैं, क्योंकि वह बुद्धि विहीन होता है। हिन्दी के उपन्यास कर सम्राट प्रेमचन्द्र ने ठीक ही लिखा है कि ''जिसके पास बुद्धि नहीं है, उसको बिना सींग का पशु समझना चाहिए।''

विद्या अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान से सार संचयन द्वारा बुद्धि अपना विकास करती है। जो व्यक्ति ज्ञानार्जन को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित रखते है और उसको बुद्धि का अंग बनाकर आचरण में नहीं ढालते हैं, वे वस्तुतः उस गधे के समान है जो पुस्तकों का बोझ लादे घूमते रहते है। इस संदर्भ में राक्षस राज लंकेश रावण का उदाहरण दृश्टव्य है। वह दस विद्वानों के ज्ञान का धनी था, परन्तु उसकी बुद्धि का विकाश नहीं हो पाया था। और वह अपने ज्ञान एवं बल का दुरूपयोग करता था इसी कारण उसके दस शीशों के ऊपर गधे का सिर आरोपित किया जाता है।

बुद्धि–तत्व दैवीय विभूतियों में सर्वोच्च कोटि का वरदान है। इसका उपयोंग हम जितनी ईमानदारी से करेंगे, हमारे जीवन में सफलता की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

चिंतन

प्रभात सोनी
कम्प्यूटर लिपिक

1.मानव जीवन में लगन बड़े महत्व की वस्तु है जिसमें लगन है वह बूढ़ा भी जवान है जिसमें लगन नहीं वह जवान भी मृतक है।
—प्रेमचन्द्र

2.अपने अज्ञान का आभास हो जाना ही ज्ञान का प्रथम सोपान है । —डिज रैली

3.सत्य का सबसे बड़ा मित्र समय है,उसका सबसे बड़ा शत्रु पूर्वाग्रह है, उसका स्थायी साथी विनम्रता है। —काल्टन

4.विनम्रता समस्त गुणों की आधार शिला है —कन्फ्यूशियस

5.क्षण भर की सफलता वर्षों की असफलता की कमी को पूरा कर देती है —राबर्ट ब्राउनिंग

6.कष्ट उठाओं, सुख पाओ —गोर्की

7.जरा सी भी आनाकानी करने वालों से सावधान रहो। —चाणक्य

8.राजनीति में हिस्सा न लेने का सबसे बड़ा दंड यह है कि अयोग्य व्यक्ति आप पर शासन करने लगते है। —चाणक्य

9.बातचीत के दौरान अगर मगर कहकर बात करने वाले व्यक्ति से सावधान रहो। —सुकरात

10.अकल सुनने पढ़ने से नहीं, ठोकरें खाने के बाद आती है। —सुकरात

11.मनुष्य की महानता उसके कपड़ो से नहीं अपितु उसके चरित्र से आकीं जाती है।
—महात्मा गाँधी

12.आलस्य में समय बिताना आत्महत्या के समान है। —सुकरात

13.जहां दूसरों की निंदा हो रही हो, वहां से तुम चलते बनो एक दिन वहां तुम्हारी भी निंदा होगी। —विदुर

14.दुनिया की हर चीज ठोकर लगने से टूट जाती है। एक “कामयाबी” ही है, जो ठोकर खाकर ही मिलती है। —महात्मा गाँधी

15.अत्याचारी के प्रति विद्रोह करना, ईश्वर के आदेश का पालन करना है। —फ्रैंकलिन

जिन्दगी

प्रभात सोनी
कम्प्यूटर लिपिक

खूबसूरत आशियाना है जिन्दगी,
आज है कल मिट जाना है जिन्दगी,
हर राह पर नया मोड़,
एक अफसाना है जिन्दगी,
एक अनजान उलझी हुई,
पहेली है जिन्दगी,
मौत के साथ है,
फिर भी अकेली है जिन्दगी।

अपना दर्द

जितेन्द्र कुमार याज्ञिक
कम्प्यूटर टीचर

वह एक कागज का टुकड़ा था फिर भी प्राणों को भेद गया
दर्द का एक तूफान उठा और अम्बर तल का छेद गया,
स्याही की चंद लकीरों में यह दर्द जोर से भर गया
हर शब्द में एक सैलाब बना था ब्याकुलता के तीरों से
राह ताकती आँखे अब नित जल ही जल बरसाती है
पत्थर सिसकी लेता है जब यादें उसे सताती हैं
गोद किसी की सूनी कर सिन्दूर किसी का पोंछ गये
जीवन भर की तड़प छोड़ दी, सुखद निकेतन तोड़ दिया।
खुशी झूमती जिस आँगन पर, खामोशी की बिछी बिसात।
नहीं दिवाली नहीं दशहरा, दिन भी लगता है ज्यों रात।
ये युद्ध कदाचित नहीं किसी को,श्रेष्ठ लाभ पहुँचाते हैं।
रिश्तों के भूतल पर बस, दीवार उठाते जाते है।
शब्द बहुत सक्षिप्त लिखे थे, फिर भी वह भेद गया।
दर्द का इक तूफान उठा और, अम्बर तल को भेद गया।

ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत–सूर्य

जगरूप
बी0एड0 छात्र

सौर ऊर्जा वह ऊर्जा है जो सीधे सूर्य से प्राप्त की जा सकती है। सौर ऊर्जा ही मौसम एवं जलवायु परिवर्तन करती है। यही धरती पर सभी प्रकार के जीवन का सहारा है वैसे तो सौर ऊर्जा को विविध प्रकार से प्रयोग किया जाता है किन्तु सूर्य की ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलने को ही मुख्य रूप सौर ऊर्जा के रूप में जाना जाता है। सूर्य की ऊर्जा को दो प्रकार से विद्युत ऊर्जा में बदला जा सकता है –

1. प्रकाश विद्युत सेल की सहायता से
2. किसी तरल पदार्थ को सूर्य की ऊष्मा से गर्म करने के बाद इससे विद्युत जनित चलाकर।

विशेषताऐं – सौर ऊर्जा सूर्य एक दिव्य शक्ति स्रोत है। सौर ऊर्जा भविष्य के लिए अक्षय ऊर्जा स्रोत सावित होने वाला है। इसकी सबसे बडी विशेषता आप्रदूषणकारी तथा अत्यधिक विस्तारित व अक्षुण्य होना है।

सम्पूर्ण भारतीय भू–भाग पर पॉच हजार लाख करोड किलो वाट घण्टा प्रति वर्ग के बराबर सौर ऊर्जा आती है जो कि विश्व के सम्पूर्ण विद्युत खपत की कई गुने से अधिक है। साफ धूप वाले दिनों में प्रति दिन का औसत सौर ऊर्जा का उत्पादन चार से सात किलो वाट घण्टा प्रति वर्ग किलोमीटर होता है। देश में वर्ष की लगभग 250 से 300 दिन ऐसे होते है जब सूर्य की रोशनी पूरे दिन उपलब्ध रहती है।

उपयोगः–

1. सोलर पाचक– सौर ऊर्जा द्वारा खाना पकाने से विभिन्न प्रकार के परम्परागत ईधनों की बचत होती है। बाक्स पाचक, वाष्प पाचक आदि प्रकार के सौर पाचक विकसित किये गये हैं। जो बरसात और धुन्ध के दिनों में भी काम आते हैं।
2. सौर जल ऊष्मक– इसकी सहायता से घरेलू व्यापारिक व औद्योगिक इस्तेमाल के लिए जल गर्म किया जा सकता है। देश के पिछले दो दशकों से सौर जल ऊष्मक बनाये जा रहे है। लगभग चार लाख पचार हजार वर्ग मीटर से अधिक सौर जल ऊष्मा संग्राहक स्थापित किये जा चुकें है। जो प्रतिदिन 220 लाख लीटर जल को 60 से 70 डिग्री सेल्सियस तक गर्म करते हैं जिससे हमारे परम्परागत ईधनों की बचत होती है।
3. फोटो बोल्टायिक प्रणाली– इस प्रणाली के सोलर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदला जाता है जिसकी सहायता से विभिन्न प्रकार के विद्युत यंत्र चलाये जाते हैं – जैसे विद्युत जल पम्प, विद्युत फैन, विद्युत रिफ्रिजरेटर आदि।

लालटेन जैसे उपकरणों की सहायता से सौर ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। सौर ऊर्जा का प्रयोग करके हम अपने परम्परागत ईधनों की बचत कर सकते हैं। केवल सरकारी सहयोग मात्र ही नहीं अपितु जनसहभागिता के द्वारा ऊर्जा के इस विशाल अक्षय स्रोत के संरक्षण एवं सवर्धन में सहायता मिलनी चाहिए ताकि इसकी सहायता से हम अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकें।

समय का सदुपयोग

शैलेन्द्र अवस्थी
बी0एड0 छात्र

परिश्रम सफलता की कुंजी है। समय का चक्र अपनी गति से चलता रहा है या यूँ कहें कि भाग रहा है। अक्सर इधर–उधर कही न कहीं किसी न किसी से ये सुनने को मिलता है, कि क्या करें समय नही मिलता। वास्तव में हम निरन्तर गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नहीं पाते और पिछड़ जाते हैं। समय जैसी मूल्यवान संपदा का भण्डार होते हुए भी हम हमेशा उसकी कमी का रोना रोते रहते हैं। क्योंकि हम इस अमूल्य समय को बिना सोचे समझें खर्च कर देते हैं।

विकास की राह में समय की बर्बादी ही सबसे बड़ा शत्रु है। एक बार हाँथ से निकला हुआ समय कभी वापस नहीं आता हमारा बहुमूल्य वर्तमान भूत बन जाता है। जो कभी वापस नही आता सत्य कहावत है–'बीता हुआ समय और बोले हुए शब्द कभी वापस नही आते'

चाणक्य के अनुसार– ''जो व्यक्ति जीवन में समय का ध्यान नही रखता उसके हाँथ में असफलता और पछतावा ही लगता है।''

समय जितना कीमती और वापस न मिलने वाला तत्व है उतना उसका महत्व हम लोग प्रायः नहीं समझते। परन्तु जो लोग इसके महत्व को समझते हैं वे विश्व पटल के इतिहास पर सदैव विद्यमान रहते है। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर समय के बड़े पाबंद थे, जब वे कॉलेज जाते तो रास्ते में दुकानदार अपनी घड़िया उन्हें देखकर ठीक करते थे।

समय का प्रबंधन प्रकृति से स्पष्ट समझा जा सकता है। समय का कालचक्र प्रकृति में नियमित है। दिन, रात, ऋतुओं का समय पर आना जाना है यदि कहीं अनियमितता है तो विनाश की लीला भी प्रकृति सिखा देती है। समय की उपेक्षा करने पर कई बार विजय का पासा पराजय में पलट जाता है। नेपोलियन ने आस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया क्योंकि वहॉ के सैनिकों ने पॉच मिनट का विलम्ब कर दिया। लेकिन वहीं कुछ ही मिनटों में नेपोलियन बंदी बना लिया गया क्योंकि उसका एक सेनापति कुछ विलम्ब से आया। वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन की पराजय का सबसे बड़ा कारण समय की अवहेलना ही थी।

कहते है, खोई दौलत फिर भी कमाई जा सकती है, भूली विद्या पुनः पायी जा सकती है, किन्तु खोया हुआ समय पुनः वापस नहीं लाया जा सकता सिर्फ पश्चाताप ही शेष रह जाता है। "Lost time is never found again is you spend too much time thinking about a thing you will never get it done."Bruce Lee" हमारे ऋषि मुनियों ने समय के सद्उपयोग की शिक्षा दी है। एक बार एक श्रद्धालू धनिक ने ऋषि से कहा –''प्रभु श्रेष्ठ कार्यों में समय लगाना तो आवश्यक है, यह मैं मानता हूँ। लेकिन यदि कोई समयाभाव के कारण वैसा नही कर सके तो फिर क्या करें?''

आचार्य ने रहस्यमयी मुस्कान विखेरी और फिर बोले ''श्रेष्ठि! मुझे तो कोई व्यक्ति आजतक ऐसा नही मिला जिसे विधाता ने दिन में चौबीस घण्टों में से एक पल भी कम दिया हो फिर समय की कमी से आपका क्या अभिप्राय है।'' फिर स्पष्ट करते हुए आचार्य ने कहा ''वत्स जिसे हम समयाभाव कहते हैं वह समय की कमी नही है समय की अव्यवस्था है। इस कारण समय कई अनुपयोगी और अनावश्यक कार्यों में लग जाता है जिससे उपयोगी कार्यों के लिए समय नही बच पाता। इसी को हम समय का आभाव कहते है।''

समय की अव्यवस्था ही समय का आभाव है। आप कितने घंण्टे काम करते हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है – उन घंण्टो में आप क्या काम करते हैं यह महत्वपूर्ण है।

जीवन का अर्थ ही है– समय! समय हमारी समस्या नहीं है, समस्या तो हमारी अनभिज्ञता है – हम अपनी प्राथमिकताओं में अनभिज्ञ हैं फिर हम अपनी इस अनभिज्ञता का प्रदर्शन बडे गर्व से करते हैं – ''हमारे पास तो समय नहीं है।'' सोचिये जरा क्या अर्थ है इसका?इसका अर्थ है हमने समय को अपना मालिक बना दिया है और खुद को उसका गुलाम। इसका मतलब है हम समय का उपयोग करना नही जानते इसलिये समय हमारा उपयोग करने लग गया है। लेकिन जो अपनी प्राथमिकताओं को जान लेता है वह समय का मालिक बन कर जीता है और इसी समय में सब कुछ कर पाता है। अगर हम समय का सही सद्उपयोग और उसका सही नियोजन करें तो हम निश्चित तौर पर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगे। किसी ने ठीक ही कहा है।

समय के साथ चल प्यारे। नहीं तो हॉथ मलयारे।
समय बलवान होता है। प्रखर इससे सभी हारे।।

प्रत्येक मानव में पूर्ण विकास की सम्भावना उपस्थित है और हमें उसके लिए जागरूक रहना चाहिए। विकास के लिए परिवर्तन और समय का सही सदउपयोग आवश्यक है। उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग पर अनेक कठिनाइयॉ आती है। हमें सकारात्मक विचार और समय का सद्उपयोग कर उन पर विजय प्राप्त करनी है।

हमारे युवा वर्ग को चाहिये कि वे परिवर्तन के लिये सदैव तैयार रहे, अपने मस्तिष्क को श्रेष्ठ विचारों से युक्त करें समय का सदुपयोग करें जिससे उनका भविष्य सुखद और सम्पन्न हो सके। हमें अपने जीवन को संतुलित रखने हेतु यह प्रयास करना चाहिये कि हम नित्य एक नया जीवन जिये।

शिक्षक दिवस

विशाल दीक्षित
बी0एड0 छात्र

भारत भूमि पर अनेक विभूतियों ने अपने ज्ञान से हम सभी का मार्ग दर्शन किया है, उन्हीं में से एक महान विभूति शिक्षाविद्, दार्शनिक, महानवक्ता एवं आस्थावान हिन्दु विचारक डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया हैं। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाये, तो समाज की अनेक बुराईयों को मिटाया जा सकता है।

ऐसी महान विभूति का जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाना हम सभी के लिए गौरव की बात है। डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णान के व्यक्तित्व का ही असर था कि 1952 में आपके लिए संविधान के अंतर्गत उपराष्ट्रपति का पद सृजित किया गया, स्वतंत्र भारत के पहले उपराष्ट्रपति जब 1962 में जब राष्ट्रपति बने तब कुछ शिष्यों एवं प्रशंसकों ने आपसे निवेदन किया कि वे उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाना चाहते है, तब डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने कहा कि मेरे जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने से मैं अपने आपकों गौरवान्वित महसूस करूंगा। तभी से 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ज्ञान के सागर थे। उनकी हाजिर जवाबी का एक किस्सा आप से बता रहे है—एक बार एक भोज के अवसर पर अंग्रजों की तारीफ करते हुए एक अंग्रेज ने कहा—ईश्वर हम अंग्रजों को बहुत प्यार करते है, उसने हमारा निर्माण बड़े यत्न के साथ किया है इसी नाते हम इतने गोरे और सुन्दर है। उस सभा में डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन भी उपस्थित थे उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी। अतः उन्होंने उपस्थित मित्रों को सम्बोधित करते हुए एक किस्सा सुनाया—मित्रों एक बार ईश्वर को रोटी बनाने का मन हुआ, उन्होंने जो पहली रोटी बनायी वो जरा कम सेंकी परिणामस्वरूप अंग्रजों का जन्म हुआ। दूसरी रोटी कच्ची न रह जाये इसलिए भगवान ने उसे ज्यादा देर तक सेंका इसलिए वह जल गयी, जिस कारण निग्रो लोग पैदा हुए। मगर इस बार भगवान जरा चौकन्ने हो गये वह ठीक से रोटी पकाने लगे इस बार जो रोटी बनी वो न ज्यादा पकी थी न ज्यादा कच्ची, ठीक सेंकी थी परिणामस्वरूप हम भारतीयों का जन्म हुआ। ये किस्सा सुनकर उस अंग्रेज का सिर शर्म से झुक गया और बाँकी लोगों का हॅंसते—हॅंसते बुरा हाल हो गया।

मित्रों ऐसे संस्कारित एवं शिष्ट,माकूल जवाब से किसी को आहत किए बिना डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने भारतीयों को श्रेष्ठ बना दिया। डा0 सर्वपल्ली राधाकृशणन जी का मानना था कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण में शिक्षा का विशेष योगदान है। विश्व शांति, विश्व समृद्धि एवं विश्व सौहार्द में शिक्षा का महत्व अति विशेष है। उच्चकोटि के शिक्षाविद, डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने भारतरत्न से सम्मानित किया। डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के विचारों को ध्यान में रखते हुए मित्रों मेरा यह मानना है कि शिक्षक दिवस के पुनीत अवसर पर हम सब यह प्रण करें कि शिक्षा की ज्योति को पूरी ईमानदारी से अपने जीवन में आत्मसात करेंगे क्योंकि शिक्षा किसी में भेद नहीं करती, जो इसके महत्व को समझ जाता है वो अपने भविष्य को सुनहरा बना लेता हैं।

एक देहाती स्त्री का पत्र

कुसुम कुशवाहा

बी0एड0 छात्रा

एक देहाती स्त्री जिसका पति शहर गया है स्त्री को ज्यादा पढ़ने लिखने की समझ नहीं है शहर में रह रहे पति को वह कुछ इस प्रकार पत्र लिख रही है—प्यारे पतिदेव मिलन प्रमाण। आपके चरणों में क्या चक्कर है। आपने चिट्ठी नहीं लिखी मेरी सहेली को। नौकरी मिल गयी है हमारी गाय को। बछड़ा दिया है हमारे दादा जी ने। शराब शुरू कर दिया है मैने। तुमको बहुत खत पत्र लिखे पर तुम नहीं आये कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गया है दो महिने के राशन की चीनी। आप आते वक्त ले आना एक सुन्दर स्त्री। मेरी सहेली बन गयी हेमा मालिनी। इस वक्त टी0वी0 पर गाना गा रही है हमारी बकरी। तुम्हें याद कर रही है एक पड़ोसन। तंग करती है तुम्हारी बहन। सिर दर्द से लेटी है हमारी कुतिया। गेंहू बो दिया है ताऊ जी के सिर में। चोंट लगी है तुम्हारी चिट्ठी को अब मै पत्र समाप्त कर रहीं हूं

पैर छूने की परंपरा क्यों

अशोक कुमार विमल

बी0एड0 छात्र

मनुष्यों के शरीर में एक विशेष विद्युत ऊर्जा प्रवाहित होती रहती है, जिसकी दिशा सिर से आरंभ होकर पैर की ओर जाती है हाथों की हथेलियों से भी यह ऊर्जा निष्कासित होती रहती है, ऋषि मुनियों वीर पुरूषों तेजस्वीनी स्त्रीयों आदि में इस ऊर्जा का स्तर धनात्मक एवं उच्च रहता है जब एक छात्र या अन्य कोई व्यक्ति ऐसे लोगों के पैरों को छूता है तो ऋषि की धनात्मक ऊर्जा उसके शरीर में प्रभावित होने लगती है ऋषि इस प्रक्रिया के दौरान जब छात्र के सिर पर हाथ रखते है तो ऋषि की सघन ऊर्जा के कारण सिर का आधा भाग एक व्यवस्थित ऊर्जा से ओत–प्रोत हो जाता है जिससे उसके मस्तिष्क एवं शरीर को एक विशेष ऊर्जा का आभास होता है।गलत स्वभाव के व्यक्तियों के पैर नहीं छूना चाहिए नहीं तो उनकी नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है। साथ ही अनावश्यक रूप से अन्जान लोगों के पैर भी नहीं छूने चाहिए।

कविता

रूखसार बानो
बी0एड0 छात्रा

ख्वाहिश नहीं मुझे मशहूर होने की।
आप मुझे पहचानते हो बस इतना ही काफी है।।
अच्छे ने अच्छा और बुरे ने बुरा जाना मुझे।
क्योंकि जिसकी जितनी जरूरत थी।
उसने उतना ही पहचाना मुझे।।
जिन्दगी का फलसफा भी कितना अजीब है।
शामें कटती नहीं और साल गुजरते चले जा रहे है।।
एक अजीब सी दौड़ है ये जिन्दगी।
जीत जाओ तो कई अपने पीछे छूट जाते है।।
और हार जाओ तो अपने ही पीछे छोड़ जाते है।

उपदेश वाटिका

सुनील कुमार द्विवेदी
बी0एड0 छात्र

1. नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते है।
2. धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुएं के बादलों की तरह उड़ जाते है।
3. मनुष्य की महत्ता उसके कपड़ों से नहीं किन्तु उनके आचरण से जानी जाती है।
4. आलसी को सभी कार्य कठिन लगते है, परिश्रमी को आसान।
5. दूसरों के हित के लिए अपने सुख का त्याग करना सच्ची सेवा है।
6. अंधा वह नहीं जिसकी आँखें है, बल्कि अंधा वह व्यक्ति है, जो अपने दोषों को ढंकता है।

बदला जमाना

पवन कुशवाहा

बी0एड0 छात्र

पुरानी संस्कृति को छोड़, आज नई टेक्नोलोजी का जमाना।
सारे देशों की बात छोड़, आज चाईना माडल का जमाना।।
पत्र और लेटर को छोड़, आज न रहा मैसेज का ठिकाना।
आज इस बात को कैसे भूलूँ, की आज आया मोबाईल फोन का जमाना।।

फिल्मी डांस डिस्को क्लबों में नाच गाना।
शराब और कबाब का रिस्ता पुराना।।
इसी रिस्ते को और मजबूत बनाना।
भारतीय नही ंतो हमें इण्डियन कहलाना।।

रोटी, साग, सब्जी, दाल–चावल नहीं भाता हमें।
पूरी और पराठे का गुजरा जमाना।।
चाऊमीन, चिकन डोसा, इडली और पेटीज, बरगर।
यही नये जमाने का हाईटेक खाना।।

शास्त्रीय राग छोड़ रॉक, पॉप गाना,।
कान फोडू संगीत पर, डीजे का जमाना।।
आशा, रफी, लता, मुकेश, किशोर को भूल जाना।
सुरैया के सुरों का, न पला न ठिकाना।।
पुरानी संस्कृति को छोड़, आज नई टेक्नोलोजी का जमाना।

समझो कुछ गलत है

विनोद कुमार
बी0एड0 छात्र

जब बचपन तुम्हारी गोद में आने से कतराने लगे,
जब माँ की कोख से झांकती जिन्दगी बाहर आने से घबराने लगे।
समझो कुछ गलत है
जब तलवारें फूल पर जोर आजमाने लगे,
जब मासूम आँखों में खौफ नजर आने लगे।
समझो कुछ गलत है
जब ओस की बूँदों को हँथेलियों पर नहीं हथियारों की नोंक पर आजमाना हो,
जब नन्हे–नन्हे तलवों को आग में गुजरना हो।
समझो कुछ गलत है
जब किलकारियां सहम कर रूक जायें,
जब तोतली बोलियां खामोश हो जायें।
समझो कुछ गलत है

सोंच

इरफान खान
छात्र
विज्ञान विभाग

कुछ भी नहीं असंभव होता
जब संकल्प लिये जाते है
संकल्पों को जब साहस के
सुदृण चरण दिये जाते है
रूख तूफान बदल सकता है
बदला जाय दृष्टिकोण अगर
तो इंसान बदल सकता है

आधुनिक हास्य चालीसा

मोहित त्रिपाठी
छात्र
विज्ञान विभाग

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
मम्मी हंसती रोते फादर।।
जय कपीस त्रिलोक उजागर।
रसगुल्ले से भर दो गागर।।

महावीर विक्रम बजरंगी।
दूर करो पैसों की तंगी।।
प्रभू मुद्रिका मेलि मुख माही।
फेल होय पर अचरज नाहीं।।

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा।
मारो गैप कभी न डरना।।
मन वचन ध्यान मनोरथ जो लावै।
गाना झूम–झूम कर गावै।।

बहुत सजग रहना है इनसे, इनके झांसे में मत आना

कुसुम कुशवाहा
छात्रा
बी0एड0 विभाग

रंगे हुए गीदर है कैसे भीड़ तंत्र में डटकर,
इनकी वाणी मधुर ,करनी है बातों से हटकर,
बगुला भगत भ्रष्टाचारी इनको आता है उलझाना,
बहुत सजग रहना है इनसे, इनके झांसे में मत आना।

त्राहि मची है, त्रस्त सभी है, आग भरी इनकी अगुवाई,
चलते चाल ये दो तरफी है, लड़वाते है ये सब भाई,
गद्दारों के बीच फंसे हो फिर भी सबको समझाना,
बहुत सजग रहना है इनसे, इनके झांसे में मत आना।

मर्यादा का बंधन इनकी नहीं समझ में आता है,
नहीं हिचक है गलत कार्य से, करे वही जो भाता है,
अत्याचार से लड़कर तुम अपनी अच्छी पहचान बनाना,
बहुत सजग रहना है इनसे, इनके झांसे में मत आना।

पच जाता है सब कुछ इनसे क्योंकि इनका पेट बड़ा है,
भ्रष्टाचार व बेईमानी का इनके ऊपर चढ़ा नशा है,
लेकिन जीत तुम्हारी होगी, गर निश्चय से तुमने ठाना,
बहुत सजग रहना है इनसे, इनके झांसे में मत आना।

ये संकल्प सभी मिलकर हम सबको लेना है,
भ्रष्टाचार भंवर में अटकी नैया को पार हमें लगाना है,
बड़ी लगन से काम करेंगे उंचे आयाम बनाना है,
बहुत सजग रहना है इनसे, इनके झांसे में मत आना।

देशभक्ति गीत

कपिल
छात्र, बी0एस0सी0

प्रलय मचा दे धरती पर वह गीत सुनाने आया हूँ
भारत मां की बलि वेदी पर शीश चढ़ाने आया हूँ

1. हुए सहीद देश पर अपने उनकी धन्य जवानी
स्वर्ण अक्षरों में लिखी है उनकी अमर कहानी
उनके लहू के हर कतरे का कर्ज चुकाने आया हूँ
भारत मां की बलि वेदी पर शीश चढ़ाने आया हूँ

2. बीर शिवा झॉसी की रानी अब्दुल और हमीद हुए
धन्य है उन माँओं की कोखें जिनसे अमर सपूत हुए
हर एक मां भारत की माता लाज बचाने आया हूँ
भारत मां की बलि वेदी पर शीश चढ़ाने आया हूँ

3. पड़े न ये खांईं न लड़ने पाये भाई–भाई
चाहे सिक्ख हिन्दु हो या मुसलमान ईसाई भाई
हर एक ग्रन्थ के हर पन्ने की पीर सुनाने आया हूँ
भारत मां की बलि वेदी पर शीश चढ़ाने आया हूँ

वात्सल्य की कल्पना

रागिनी देवी
छात्रा
बी0एड0 विभाग

वक्त का ये परिंदा रुका है कहां
मैं था पागल जो उसका रूलाता रहा
जब से मैं आया नरैनी नगर
गांव मेरा मुझे याद आता रहा

लौटता था मैं जब पाठशाला से घर
अपने हाथों से खाना खिलाती थी मां
राह में अपनी ममता के आंचल तले
थपकियां देकर मुझको सुलाती थी मां

सेंचकर दिल में टीस उठती रही
रात भर दर्द मुझको जगाता रहा
जब से मैं आया नरैनी नगर
गांव मेरा मुझे याद आता रहा

मां ने लिखि थी हर बात खत में मुझे
लौट आ मेरे बेटे तुझे है कसम
तू गया जबरन परेशान बेचैन हूँ मैं
नींद आती नहीं भूंख लगती है कम

कितना चाहा न रोऊं मगर क्या करूं
खत मेरी मां का मुझकों रुलाता रहा
जबसे मैं आया नरैनी नगर
गांव मेरा मुझे याद आता रहा।

"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

मेरा भारत धन्य रहे

रोहित त्रिपाठी
कम्प्यूटर लिपिक

मेरा भारत आजाद रहे
जनता यहां कि आबाद रहे
खुशियों के फूल सदा खिलते रहें
पर श्वेत कबूतर उड़ते रहें

जाति रहे और धर्म रहे
पर जनता सारी एक रहे
मंदिर और मस्जिद रहे
पर भारत प्यारा एक रहे

बेटियाँ

सीता शुक्ला
बी0एड0 छात्रा

आग सा तेज पाकर
फूलों की सुंदरता लेकर
जल सी शीतलता पाकर
इस धरा पर आती है बेटियाँ

कितनी प्यारी होती है ये बेटियाँ
हर प्रकृति की झलक होती है ये बेटियाँ
हर त्यौहार की जान होती है ये बेटियाँ
कितनी प्यारी होती है ये बेटियाँ

कोई दोष कोई अपराध
नहीं करती ये बेटियाँ
फिर क्यों मारी जाती हैं ये बेटियाँ
फिर क्यों अपमान सहती है ये बेटियाँ

फिर क्यों घुट–घुटकर
दम तोड़ती है ये बेटियाँ

सफलता

दिनेश कुमार, बी0एड0 छात्र

नहीं साथ कोई अकेले बढ़ो तुम
सफलता तुम्हारे चरण चूमलेगी
सदा जो जगाये बिना ही जगा है
अंधेरा उसे देख कर ही भगा है

वही बीज पनपा पनपना जिसे था
धुना क्या किसी के धुनाये उगाये है
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम
प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी

सही राह को छोड़कर जो मुड़े है
वही देखकर दूसरों को मुड़े है
बिना पंख तौले उड़े जो गगन में
सम्बन्ध उनके गगन से जुड़े है

अगर बन सको तो पखेरू बनो तुम
प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी

भारतीय किसान

सुनील कुमार , बी0एड0 छात्र

हरी भरी धरती नीले आकाश तले
ताव देता मुच्छन में आज किसान है चले
स्वाभिमान से चले सीना तान के चले
ग्राम देवता की पूजा भारत के तान किसान
मेहनत से विकास करें जो धरती का वरदान
पवन सूर्य जिनकी माँगें स्वीकार कर चले
स्वाभिमान से चले को सीना तान कर चले
मेहनत की सच्ची मजदूरी स्वाभिमान से लेता है
कर्मवीर की संज्ञा अपने भुजबल से लेता है
संघर्षों की राह में विरहा गाय के चले
स्वाभिमान से चले वे सीना तान चले
सच्चे भारत वासी है खेतिहार मजदूर किसान
स्वाभिमान की रक्षा में सब दे सकते है प्राण
दकियानूसी ख्यालों से सिर काट चले
स्वाभिमान से चले वे सीना तान चले

गुरू का महत्व

प्रियंका
बी०एड० छात्रा

गुरू का ज्ञान बड़ा महान
कोई न कर सके इसका रणदान
इसमें है हमारे हिन्दुस्तान की जान
कभी न मिट सकेगा इसका नामो निशान
गुरू तो गुरू होते है वही शिक्षा का बीज बोते है
सत्यता की राह दिखाते है रास्ते में आ जाने वाली
समस्याओं से हमें बचाते है पथ पर चलने वाले हे पथिक
गुरूओं का सदा सम्मान करना लेकिन याद रहे विद्यार्थी
इस देश का नाम ऊंचा करना हे विद्यार्थी संघर्श तुम्हीं को करना है
राधाकृश्णन की तरह आगे बढ़ना है परिश्रम करके आगे बढ़ जाओगे
कहने को तो सब कुछ कर जाओगे सच्चे नागरिक बनते वही
जो चलते मार्ग पर है सही जो करते परिश्रम है सही आगे बढ़ पाते है वही।

कविता

ज्योति रैकवार
बी०एड० छात्रा

मैं नन्हा सा पथिक विश्व का पथ पर चलना सीख रहा हूँ
मैं नन्हा सा विहग विश्व का नभ में उड़ना सीख रहा हूँ
पहुंच सकूं निर्दिष्ट लक्ष्य तक मुझको ऐसा पग दो पर दो
पाया जग से जितना अब तक और अभी जितना अभी मैं पाऊं
मनोकामना है यह मेरी उससे कही अधिक दे जाऊं
धरती को ही स्वर्ग बनाने का हर एक नया संकल्प बनाऊं

मेरे सपनों का भारत

शोभा सिंह
छात्रा, विज्ञान विभाग

मेरे सपानों के भारत में मैं बिना डरे निकलूंगी
हर सन्नाटे हर अंधियारे हर गली सड़क और हर चौराहे
न होगा कोई घात लगाये न नजरें मुझको चीरेंगी
मै आजादी के रंगों से अपनी दुनिया को रंग लूंगी
न मेरी मां की कोख में मुझको मारा जायेगा
न लालच की आग में हर बार जलाया जायेगा
मैं खेलूंगी बढ़ूंगी दौडूंगी मेरी भी अपनी मंजिल होगी
जिस पर परचम मेरा लहरायेगा मेरे सपानो के भारत में
मेरे भी कुछ सपने होंगे जो टूटेंगे नही ंसच होंगे
मेरे सपनों के भारत में मेरी भी दावे–दारी होगी
आधि अधूरी नहीं पूरी भागीदारी होगी।

तू खुद को बदल

सोनम गुप्ता
छात्रा, विज्ञान विभाग

दरिया की कसम मौजों की कसम ये ताना बाना बदलेगा
तू खुद को बदल तू खुद को बदल तब ही तो जमाना बदलेगा
दरिया की कसम मौजों की कसम ये ताना बाना बदलेगा
तू चुप रहकर जो सहती रही तो क्या यह जमाना बदला है
तू बोलेगी मुंह खोलेगी तब ही तो जमाना बदलेगा
दरिया की कसम मौजों की कसम ये ताना बाना बदलेगा
दस्तूर पुराने सदियों के ये आये कहाँ से क्यों आये
कुछ तो सोचों कुछ तो समझों ये क्यों तुमने है अपनाये
दरिया की कसम मौजों की कसम ये ताना बाना बदलेगा
ये पर्दा तुम्हारा कैसा है क्या ये मजहब का हिस्सा है
कैसा मजहब किसका पर्दा ये सब मर्दो का किस्सा है
दरिया की कसम मौजों की कसम ये ताना बाना बदलेगा
आवाज उठाकर कदमों को मिला रफ्तार जरा कुछ और बढ़ा
मशरिक़ से उठो मग़रिब से उठो उत्तर से उठो दक्षिण से उठो
फिर सारा जमाना बदलेगा
दरिया की कसम मौजों की कसम ये ताना बाना बदलेगा

इरादे कर बुलंद

कीर्ति
छात्रा, विज्ञान विभाग

इरादे कर बुलंद अब रहना शुरू करती तो अच्छा था
तु सहना छोड़कर कहना शुरू करती तो अच्छा था
सदा और को खुश रखना बहुत ही खूब है लेकिन
खुशी थोड़ी अपने को भी दे पाती तो अच्छा था
दुःखों को मान किस्मत हार कर रहने से क्या होगा
तू आँसू पोंछकर मुस्कुरा लेती तो अच्छा था
ये पीला रंग लब सूखे सदा चेहरे पे मायूसी
तू अपनी इक नई सूरत बना लेती तो अच्छा था
तेरी आँखों में आँसू है तेरे सीने में है शोले
तू इन शोलों में अपने गम जला लेती तो अच्छा था
है सर पर बोझ जुल्मों का तेरी आँखें सदा नीची
कभी आँखें उठा तेवर दिखा देती तो अच्छा था
तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है लेकिन
तू इस आँचल का एक परचम बना लेती तो अच्छा था।

जीवन में घबराना कैसा

सुमन साहू
बी०एड० छात्रा

ये वक्त न ठहरा है ये वक्त न ठहरेगा
यूं ही ये गुजर जायेगा घबराना कैसा
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा
सागर के सीने से पायें है जब मोती
लहरें जब बलखाएं घबराना कैसा
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा

ये सुख–दुःख जीवन में आते और जाते है
दुःख पहले आ जाये तो घबराना कैसा
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा
जब कदम बढ़ाएं है मंजिल मिल जायेगी
गर राह जरा मुश्किल घबराना कैसा
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा

महाविद्यालय की प्रमुख विशेषतायें

1. महाविद्यालय वाई–फाई सुविधायुक्त परिसर है
2. सुसज्जित पुस्तकालय की व्यवस्था है।
3. विज्ञान संकाय में व्यवस्थित प्रयोगशालाएं है।
4. राष्ट्रीय सेवा योजना की एक ईकाइ है।
5. निर्धन छात्र एवं छात्राओं को छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है
6. महाविद्यालय में खेल–कूद की समुचित व्यवस्था की गई है।
7. छात्राओं के लिए कामन रूम की व्यवस्था है।
8. विद्युत आपूर्ति की वैकल्पिक व्यवस्था है।
9. सीसीटीवी कैमरा युक्त परिसर है।
10. यह महाविद्यालय SHIATS डिसटेंस एजुकेशन का एक केन्द्र है।
11. महाविद्यालय में छात्रों को कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था की गई है।

उपस्थिति सम्बन्धी सूचना

1. प्रत्येक विद्यार्थी की कक्षाओं में 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है अन्यथा उन्हें विश्वविद्यालय परीक्षा से वंचित कर दिया जायेगा।
2. विद्यार्थी अपनी उपस्थिति सम्बन्धित अध्यापक के पास उपस्थिति रजिस्टर में अवश्य दर्ज कराये।

अनुशासन सम्बन्धी निर्देश

छात्रों की विभिन्न समस्याओं के निस्तारण तथा उनमें अनुशासन बनाये रखने के उद्देश्य से महाविद्यालय की अनुशासन समिति द्वारा बनाये गये नियमों को मानना छात्र एवं छात्रा का परम् कर्तव्य है।

1. महाविद्यालय परिसर में प्रत्येक छात्र को परिचय पत्र रखना अनिवार्य होगा।
2. महाविद्यालय परिसर में धूम्रपान, तम्बाकू, गुटखा एवं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन पूर्णतः प्रतिबन्धित है। उल्लंघन करने वाले छात्रों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी ।
3. समय सारणी के अनुसार विद्यार्थी अपने कक्ष में रहेंगे। रिक्त कालांश में किसी भी दशा में बरामदे में टहलना निषिद्ध है ।
4. छात्राएं रिक्त कालांश में गर्ल्स कामन रूम में जायेंगी।
5. महाविद्यालय परिसर में मोबाइल साइलेंण्ट मोड में रखना अनिवार्य है।
6. यदि कोई छात्र किसी गलत कार्य में पाया गया तो उसे महाविद्यालय से प्राप्त होने वाली सभी सुविधाओं से वंचित कर दिया जायेगा।
7. छात्र एवं छात्रा को महाविद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के प्रति विनम्र एवं आदरयुक्त व्यवहार करना होगा।
8. महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ बनाये रखने में छात्रों का सहयोग अपेक्षित है।
9. रैंगिंग एक अपराध है रैंगिंग में लिप्त पाये गये छात्र/छात्राओं के विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही की जायेगी।

पुस्तकालय सम्बन्धी आवश्यक निर्देश

1. पुस्तकें प्राप्त करते समय अपना परिचय पत्र एवं प्रवेश शुल्क रसीद लाना अनिवार्य है।
2. पुस्तकालय काउन्टर पर छात्रों को अनुशासन एवं विनम्रता का व्यवहार करना आवश्यक है।
3. पुस्तकालय कार्ड/परिचय पत्र दूसरे छात्र/छात्राओं को देने पर निरस्त कर दिया जायेगा।
4. खोई हुए या क्षतिग्रस्त पुस्तक का निर्धारित मूल्य या उसकी दूसरी प्रति जमा करना होगा।
5. समस्त छात्र/छात्राओं को विश्वविद्यालय परीक्षा के एक माह पूर्व पुस्तकालय की पुस्तकों को जमा करना अनिवार्य है।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका

महाविद्यालय "समर्पण" नामक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है जिसमें छात्रों एवं अध्यापकों के उच्च स्तरीय साहित्य तथा वैज्ञानिक अनुसंधान विषयक लेख एवं श्रेष्ठ कविताओं का प्रकाशन करने का प्रयास किया जा रहा है। जिसमें हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी एवं संस्कृत खण्ड भी है।

परिचय पत्र

महाविद्यालय के प्रत्येक छात्र के पास परिचय पत्र रहना अनिवार्य है। परिचय पत्र खो जाने पर इस आशय का एक प्रार्थना पत्र प्राचार्य / पुस्तकालय अधीक्षक को देने तथा 20 / – रूपये जमा करने पर परिचय पत्र की द्वितीय प्रति प्राप्त की जा सकेगी।

छात्रवृत्तियाँ

1. महाविद्यालय में अध्ययनरत सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के छात्रों को शासन द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
2. छात्रवृत्ति हेतु शासन द्वारा निर्धारित समयान्तर्गत आवेदन पत्र आनलाइन करना एवं हार्डकापी कार्यालय में जमा करना छात्र का दायित्व होगा।
3. छात्र द्वारा समय से आवेदन पत्र आनलाइन न करने एवं आवेदन पत्र में सही सूचनाएं न भरने के कारण छात्रवृत्ति प्राप्त न होने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सम्बन्धित छात्र का होगा।

राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S.)

महाविद्यालय में एन0एस0एस0 की एक इकाई है जिसके प्रभारी डा0 लखन लाल कुशवाहा है इकाई में 100 छात्र सामान्य कार्यक्रम तथा 50 छात्र विशेष शिविर हेतु चुने जाते है। राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रतिभाग हेतु छात्र एवं छात्राएं सम्बन्धित कार्यक्रम अधिकारी से सम्पर्क करें।

क्रीड़ा

यह महाविद्यालय अध्ययन के साथ–साथ क्रीड़ा के क्षेत्र में भी छात्रों को जागरूक बनाने का निरंतर प्रयास करता है महाविद्यालय में फुटबाल, बालीबाल, बास्केट बाल, क्रिकेट, बैटमिंटन आदि की समुचित व्यवस्था है। महाविद्यालय समय–समय पर विश्वविद्यालय तथा अंतरविश्वविद्यालयीय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए छात्रों को जागरूक करता रहता है।

छात्रावास

महाविद्यालय में दूर–दूर से आये हुए छात्रों के लिए छात्रावास की व्यवस्था है। जिसमें लगभग 20 से 25 छात्रों के आवास की व्यवस्था है। जिसका संचालन महाविद्यालय के प्राचार्य के द्वारा होता है। छात्रावास में रहने वाले छात्रों को महाविद्यालय के द्वारा सुलभ सम्पूर्ण सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।

SHIATS अध्ययन केन्द्र

समस्त छात्र/छात्राओं एवं अन्य इच्छुक अभ्यर्थियों की रोजगार परक शिक्षा हेतु महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश इलाहाबाद एग्रीकल्चर डीम्ड विश्वविद्यालय का अध्ययन केन्द्र स्थापित है जिसके अन्तर्गत कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा प्रबन्धन, समाज कार्य एवं कम्प्यूटर अप्लीकेशन आदि में स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तरीय डिग्री/डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित हो रहे है

सत्र 2015–2016 के लिए प्रवेश हेतु इच्छुक अभ्यर्थी अध्ययन केन्द्र में सम्पर्क कर पंजीकरण एवं परीक्षा आवेदन पत्र प्राप्त कर सकते है।

राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता अभियान (NDLM)

प्रधानमंत्री योजना के तहत राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता अभियान के अन्तर्गत हर परिवार में कम से कम एक व्यक्ति को कम्प्यूटर शिक्षा निःशुल्क प्रदान किये जाने की यह योजना महाविद्यालय में संचालित की जा रही है। समस्त छात्र/छात्राओं को सूचित किया जा रहा है, कि जो छात्र/छात्रा प्रधानमंत्री योजना के तहत कम्प्यूटर शिक्षा ग्रहण करने के इच्छुक हों वह महाविद्यालय में संचालित इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर इस योजना से लाभ प्राप्त करें।